अध्याय 12

एकता और आत्मिक वरदान

ग्यारहवें अध्याय के दो विषय, सिर ढांकना और सामुदायिक भोज के समय विभाजन, पौलुस और कुरिंथुस की कलीसिया के बीच मुख्य प्रसंग था। दोनों मामले "मूर्तियों के सामने बलि की गई वस्तु" (8:1) और कलीसिया में सभा के दौरान उचित व्यवहार से संबंधित है।[1] जो लोग रोमी देवी-देवताओं की उपासना करते हैं उनके लिए सिर ढांकना धर्मनिष्ठता की बात मानी जाती है। यह एक ऐसा अभ्यास था जिससे मसीही अपने आपको अलग रखते थे। जब कलीसिया विभाजित होकर सामुदायिक प्रेम भोज में भाग लेती थी, तो वे सामुदायिकता, सहभागिता, और एक दूसरे के साथ आवश्यकतानुसार सहायता करने की आत्मा का अनदेखा कर रही थी। यह प्रभु भोज में वर्णित मसीही संगति का आवश्यक गुण है। पौलुस ने 8 से लेकर 10वें अध्याय में जिन समस्याओं को संबोधित किया है और 12वें अध्याय में आत्मिक वरदानों का परिचय दिया है, उनके बीच 11वें अध्याय के शीर्षक एक कड़ी के समान है।

जब कुरिंथुस के विश्वासी आराधना के लिए एकत्रित होते थे तो उन्हें कैसा व्यवहार करना चाहिए, इसके विषय में उन्हें आगे का निर्देश दिया गया है। विशेषकर, पौलुस यह कह रहा था कि उन्हें कलीसिया में आत्मिक वरदानों का उचित अभ्यास करना सीखना चाहिए। आइये हम अध्याय 12 से लेकर अध्याय 14 तक अध्ययन करना प्रारंभ करें, जो "आत्मिक वरदानों के विषय" (12:1) से परिचित कराया गया है।

"आत्मा की अगुआई से बोलना" (12:1-3)

[1]हे भाइयों, मैं नहीं चाहता कि तुम आत्मिक वरदानों के विषय में अज्ञात रहो। [2]तुम जानते हो, कि जब तुम अन्यजाति थे, तो गूंगी मूरतों के पीछे जैसे चलाए जाते थे वैसे चलते थे। [3]इसलिए मैं तुम्हें चितौनी देता हूं कि जो कोई परमेश्वर की आत्मा की अगुआई से बोलता है, वह नहीं कहता कि यीशु स्त्रापित है; और न कोई पवित्र आत्मा के बिना कह सकता है कि यीशु प्रभु है।

आयत 1. ये शब्द **के विषय में** उस पत्री की ओर ध्यान आकर्षित करता है जिसे कुरिंथुस की कलीसिया के सदस्यों ने पौलुस को भेजी थी और उसमें जो प्रश्न उन्होंने उसे पूछा था। 7:1 में पौलुस ने कहा था, "उन बातों के विषय में जो तुम

ने लिखीं, यह अच्छा है, कि पुरूष स्त्री को न छुए"; और 8:1 में उसने कहा था, "अब मूरतों के सामने बलि की हुई वस्तुओं के विषय ... ।"

पौलुस अब दूसरे विषय पर चर्चा करने के लिए तैयार था जिसमें मसीही और मसीही होने से पूर्व व्यवहारों पर ध्यानपूर्वक अलगाव की आवश्यकता थी। कलीसिया में कुछ लोग, जिस प्रकार पवित्र आत्मा ने उन्हें **आत्मिक वरदानों** की अभ्यास करने का सामर्थ प्रदान किया था, अभ्यास कर रहे थे। ऐसा लगता है कि इनमें से कुछ वरदान जो आरंभिक मसीहियों को दिया गया था वे मूर्तिपूजकों के वरदानों के समान्तर थे। उदाहरण के लिए, चंगा करने वाले और चंगाई की कथा, प्राचीन संसार से चली आ रही थी। इसके साथ ही, इस्राएल के भविष्यवक्ताओं या जिस प्रकार मसीहियों ने "भविष्यवाणी" को परिभाषित किया था, संभवतः वैसे अपोलो के भक्तों ने इसे परिभाषित न किया हो, लेकिन शब्दावली एक ही जैसा था।

सारे जगत के धार्मिक लोगों का अनुमान यह है कि अलौकिक रूप से वरदान प्राप्त भक्तों का देवी या देवता से विशेष संबंध है और जिन लोगों को वरदान नहीं है वे ऐसे संबंध से वंचित हैं। पौलुस ने इस तर्क का इनकार किया। इन मसीहियों के लिए, मसीह में पाये जाने का अर्थ एक दूसरे के साथ परस्पर संबंध से था न कि अलौकिक वरदानों का अभ्यास। इसके साथ ही, प्रेरित ने विशिष्ट वरदानों से भरे जाने के तथ्य का अनदेखा नहीं किया। वह चाहता था कि भाई लोग इस बात से अवगत् हो जाएं कि परमेश्वर के वरदान मूर्तिपूजकों द्वारा अभ्यास किए जाने वाले अनुष्ठानों से भिन्न हैं। मसीहियों के लिए उनकी उपस्थिति और उद्देश्य भिन्न प्रकार का है।

विशेषण πνευματικῶν (*न्यूमाटिकोन*, "आत्मिक") नपुंसक लिंग हो सकता है, ऐसे स्थिति में 12:1 का वाक्यांश का अनुवाद "आत्मिक बातें" या "आत्मिक वरदान" हो सकता है। दूसरी तरफ़, यह पुल्लिंग भी हो सकता है, ऐसी अवस्था में इसका तात्पर्य "आत्मिक लोग" हो सकता है। जो चर्चा इस विषय पर यहाँ अनुमोदित है, उससे यह स्पष्ट है कि पौलुस के मन में यह बात थी कि जो वरदान कुरिंथुस के कुछ मसीहियों ने प्राप्त किए थे वह पवित्र आत्मा के द्वारा दिए गए थे (देखें 12:8)। इस कारण, NASB के अनुवादकों का "वरदान" शब्द को तिरछे अक्षरों में छापने का उचित निर्णय है। सामान्य अवस्था में, परमेश्वर ने अलग-अलग लोगों को नामचीन गुणों या योग्यताओं से अलंकृत किया है, परंतु पौलुस आश्चर्यकर्म करने वाले वरदानों के बारे में चर्चा कर रहा था।

आयत 2. पौलुस ने कहा**, जब तुम अन्यजाति थे, तो गूंगी मूरतों के पीछे जैसे चलाए जाते थे वैसे चलते थे।** "अन्यजाति" शब्द यूनानी भाषा के ἔθνη (*एथने*, "लोग") शब्द का अनुवाद है, जिसका यहाँ कोई नकारात्मक आशय नहीं है; लेकिन सुसमाचारों में आमतौर पर यह यहूदियों से भिन्न लोगों के लिए प्रयोग किया गया है। ऐसे संदर्भ में यह अपमानजनक शब्द है। "लोग," "अन्यजाति" थे अर्थात परिभाषानुसार वे गैर यहूदी मूर्तिपूजक लोग थे। वे परमेश्वर या उसकी व्यवस्था के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे। पवित्र आत्मा ने प्रगट किया कि

परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को कलीसिया में परमेश्वर के लोगों के रूप में सांटा है (उदाहरण के लिए देखें, रोमियों 2:29), लेकिन इस परिवर्तन ने *एथने* शब्द को एक नया अर्थ प्रदान किया। अंग्रेजी भाषी लोगों के लिए गैर मसीही "मूर्तिपूजक" हैं न कि "अन्यजाति," यद्यपि यूनानी शब्द एक जैसा ही है। 12:2 में पौलुस अपने कुछ पाठकों के मसीही होने से पूर्व जीवन को संबोधित कर रहा है, जब वे गूंगी मूरतों की उपासना किया करते थे।

पिछले चार अध्यायों में पौलुस की चर्चा का विषय मूर्तिपूजा था, परंतु 12:2 के शब्द, मसीहियों की सभा में आराधना के समय व्यवहारों में परिवर्तित हो गया है। पौलुस की चर्चा का प्राथमिक उद्देश्य यह था कि वह उन लोगों के व्यवहारों के बीच अंतर प्रस्तुत करे जो मूर्तियों को देवी-देवता समझते हैं और जो यीशु नासरी के पिता को इस कायनात का सच्चा परमेश्वर मानते हैं। पौलुस जैसे यहूदियों के लिए, इस बात का अंतर यहूदी इतिहास और पवित्रशास्त्र में निहित है (देखें यशायाह 44:9-11; यिर्मयाह 10:1-5; भजन 115:3-8)।

भूतकाल में, कुरिंथुस के लोगों ने "गूंगे मूरतों" की सेवा की थी जो सामर्थहीन थे क्योंकि उनका अस्तित्व ही नहीं था। मसीही लोग जिन आत्मिक वरदानों का लाभ उठा रहे थे उनको मूर्तिपूजकों के आराधना में अभ्यास किए जाने वाले वरदानों से नहीं मिलाना चाहिए। भविष्यवाणी, चंगाई, या अन्य-अन्य भाषा में बोलना, मूर्तिपूजकों के अनुष्ठानों से ऊपरी समानता हो सकती है; परंतु इन मसीही लोगों ने जो अनुभव किया था वह मूल रूप से उनसे भिन्न था।

आयत 3. प्रथम दृष्टया पौलुस, भाइयों को जो बात बताना चाहता था वह रहस्यमयी सा जान पड़ता है। यह कल्पना रहित बात है कि जो कोई परमेश्वर की आत्मा की अगुआई से बोलता है वह "Ἀνάθεμα Ἰησοῦ" *(अनाथेमा ईशू)* कहेगा, कि "यीशु स्रापित है।" यदि कोई ऐसा नहीं कर रहा था, तो पौलुस की चेतावनी खोखली है। लेकिन यदि कुछ लोग "परमेश्वर की आत्मा" से विनती कर रहे थे और यह कह रहे थे, "**यीशु स्रापित है**," तो वे कौन थे और ऐसा करने के लिए किसने उन्हें प्रेरित किया था? प्रेरित इस प्रकार के रहस्योद्घाटन करने में असफल क्यों रहे?

संभवतः पौलुस का यह तात्पर्य नहीं था कि जो कोई "परमेश्वर की आत्मा से बोल रहा था" वह ऐसा करेगा। वह संभवतः उन आपत्तियों का प्रत्युत्तर दे रहा था जो उन वरदानों, जैसे अन्य-अन्य भाषा का बोलना और भविष्यवाणी करना, उसके समान्तर हो जो मूर्तिपूजकों के बीच में होता हो। देखने में, इस प्रकार की गतिविधि परमेश्वर की आराधना से पूरी तरह भिन्न नहीं है। डायोनिसस और सिबिल के भक्तों के बीच मांसिक लगाव कुप्रसिद्ध है। कुछ मसीही लोगों (संभवतः यहूदी मसीही लोग) ने मसीहियों द्वारा अन्य भाषा में बोलने का विरोध किया होगा क्योंकि जो लोग मूर्तियों की पूजा करते थे संभवतः उन्होंने भी ऐसा ही बर्ताव किया होगा। इसी दृश्य के कारण यदि पौलुस ने इस विषय को संबोधित किया, तब वह उन लोगों का बचाव कर रहा था जो आत्मिक वरदान प्रयोग कर रहे थे। अन्य भाषा में बोलना, संभवतः दर्शकों को मूर्तिपूजकों के भक्तों का

पागलपन स्मरण कराता होगा; लेकिन पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा जब यह होता है तो इसका प्रभाव बिल्कुल अलग होता है जो मसीह के अनुयायियों के लिए बड़ा महत्व है। जो ईश्वरीय सामर्थ मसीही लोगों में कार्य करता है वह मूर्तिपूजकों में बलवा करने वाली ताकत से भिन्न होता है। परमेश्वर की आत्मा के द्वारा कोई भी ऐसा नहीं बोलेगा जिस प्रकार मूर्तिपूजक बोलते हैं: "यीशु स्रापित है।" इससे बढ़कर, जो हृदय से **"यीशु ही प्रभु है,"** की घोषणा करते हैं वे यह दिखाते हैं कि वे पवित्र आत्मा के आधीन हैं।

प्रेरित ने बाद का वक्तव्य केवल इस प्रकार के व्यवहार का इनकार करने के लिए ही कहा होगा। यह संभव नहीं है कि कोई परमेश्वर की आत्मा के द्वारा यीशु को स्रापित कहे, जैसे कि कोई स्व-प्रेरणा और पागलपन के कारण उसे प्रभु घोषित करे। दूसरे शब्दों में, यह हास्यास्पद होगा कि कोई पवित्र आत्मा की प्रेरणा से कहे, "यीशु स्रापित है," उसी तरह कोई भी पवित्र आत्मा की प्रेरणा बिना यीशु को प्रभु जानकर स्वीकार नहीं करेगा। यह अंगीकार करना कि "यीशु ही प्रभु है" यह प्रमाणित करता है कि अंगीकार करने वाला पवित्र आत्मा के आधीन है। कुरिंथुस के मसीहियों का यीशु, उद्धारकर्ता है, वह परमेश्वर का पुत्र है, की सार्वजनिक घोषणा, एक दूसरे का समर्थन करने का कारण था। उन्हें एक दूसरे के वरदानों पर आनंद मनाने की आवश्यकता थी और इस बात की प्रतिस्पर्धा से बचना चाहिए था कि कौन सा वरदान दूसरे वरदान से अधिक महत्वपूर्ण है। प्रेरित ने पहले ही देह की एकता पर ज़ोर देना प्रारंभ कर दिया था।

"विभिन्न प्रकार के वरदान" (12:4-11)

4वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है; 5और सेवा भी कई प्रकार की हैं, परन्तु प्रभु एक ही है; 6और प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही है, जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है। 7किन्तु सब के लाभ पहुँचाने के लिए हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है। 8क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि की बातें दी जाती हैं, और दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बातें। 9किसी को उसी आत्मा से विश्वास, और किसी को उसी एक आत्मा से चंगा करने का वरदान दिया जाता है। 10फिर किसी को सामर्थ्य के काम करने की शक्ति, और किसी को भविष्यद्वाणी की, और किसी को आत्माओं की परख, और किसी को अनेक प्रकार की भाषा, और किसी को भाषाओं का अर्थ बताना। 11परन्तु ये सब प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा कराता है, और जिसे जो चाहता है वह बाँट देता है।

पौलुस के लिए, कुरिंथियों की पत्री के प्रारंभ से ही विश्वासियों के बीच एकता, चिंता का एक मुख्य विषय रहा है (1:10; देखें 3:3)। इन भाइयों ने एकता के विषय पूछताछ नहीं की थी; उन्होंने आत्मिक वरदानों के विषय पूछताछ की थी, उन वरदानों का अभ्यास कैसे किया जाना चाहिए और उनसे

संबंधित बातें उन्होंने पूछी थी। फिर भी, पौलुस इन प्रश्नों को मसीह की देह की एकता के रूप में देखता है। प्रेरित के चिंता का विषय भी ठीक वैसा ही था जैसे कि यीशु का था (यूहन्ना 17:20, 21)। पौलुस के चालीस वर्ष पश्चात् रोम के क्लेमेंट की चिंता का विषय भी यही था (98 ईस्वी),[2] और सदियों से इसी तरह से हज़ारों लोगों की चिंता भी यही थी। आत्मिक वरदानों के बारे में प्रश्न ने पौलुस को मसीह की देह की और कई अन्य महत्वपूर्ण मामलों के बारे में लिखने के लिए अवसर प्रदान किया।

आयत 4. स्पष्टतया, पौलुस के मन में 12:4 में **वरदान** (χαρίσματα, *खारिसमाटा)* के बारे में वही विचार था जिसका वर्णन उसने पहली आयत में "आत्मिक वरदान" *(न्यूमाटिकोन)* के रूप में किया है। नए नियम में "वरदान" के लिए सबसे सामान्य शब्द δῶρον *(डोरोन)* प्रयोग किया गया है; इस शब्द के दूसरे रूप δωρεά *(डोरिया)* और δώρημα *(डोरेमा)* हैं। ये तीनों शब्द नए नियम में तीस से अधिक बार प्रयुक्त हुए हैं, लेकिन पौलुस ने अपनी पत्री में *डोरिया* केवल पाँच बार और *डोरोन* केवल एक बार प्रयोग किया है। दूसरी ओर χάρισμα *(खारिस्मा)*, नए नियम में सत्रह बार प्रयोग किया गया है, और उनमें से एक बार यह पौलुस के पत्री के बाहर प्रयोग किया गया है। सोलह में से सात बार पौलुस ने इसे 1 कुरिंथियों की पत्री में प्रयोग किया है। उसने बारहवें अध्याय में पाँच बार इस शब्द का प्रयोग किया है। पौलुस ने सावधानी पूर्वक अपने "वरदानों" के लिए *खारिस्माटा* शब्द प्रयोग किया है; जिसका अर्थ χάρις (*खारिस,* "अनुग्रह") और χαρά (*खारा,* "आनंद") से मिलता है।[3] इस शब्दकोष का प्रयोग करते हुए, पौलुस यह सुझाव प्रस्तुत कर रहा था कि जिन वरदानों का उसने संदर्भ दिया है उसे परमेश्वर ने अनुग्रह और आनंद के विस्तार रूप में प्रदान किया है जो मसीह को प्रभु करके स्वीकार करने के बाद मिलता है।

वरदानों का वर्णन जो इसके बाद के अनुच्छेद में मिलता है वह अलौकिक रूप से प्रदान किए गए हैं। परमेश्वर के अनुग्रहकारी "वरदान" (*खारिस्माटा)* में अनंत जीवन (रोमियों 6:23) समेत, सभी बातें शामिल है जो परमेश्वर अपने लोगों के लिए करता है; लेकिन 1 कुरिंथियों 12-14 का संदर्भ, इस शब्द में सीमाएं लगाती है। जबकि हर बार इस शब्द का अर्थ एक सा नहीं होता है, पौलुस यहाँ "आत्मिक वरदानों" के संदर्भ में पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दे रहा था (12:1)। प्रेरित के प्रत्युत्तर में यदि हम वरदानों की सूची देखें, तो अनुवादक निश्चित रूप से यह कह सकता था कि वह विशेष प्रकार के "वरदानों" के बारे में चर्चा कर रहा है।[4] पवित्र आत्मा ने ये विशिष्ट वरदान कलीसिया की उन्नति के लिए दिए थे, परंतु मानवीय घमण्ड इन आत्मिक वरदानों को व्यक्तिगत् उपलब्धि में बदल रहे थे। अधिक महत्वपूर्ण वरदानों, सार्वजनिक रूप से इनके प्रयोग की प्रतिस्पर्धा ही कलीसिया की विभाजन का कारण बना।

आलौकिक वरदानों की एक महत्वपूर्ण गुण यह था कि आरंभिक मसीही जिनको यह वरदान प्राप्त था वे अपनी इच्छा से इन वरदानों को प्रयोग कर सकते थे। उदाहरण के लिए, पतरस और यूहन्ना मंदिर परिसर में कितने भी लंगड़ों या

अंधों को चंगा कर सकते थे। उन्होंने अपने अधिकार का प्रयोग करते हुए यह चुना कि वे किस व्यक्ति विशेष को चंगा करना चाहते हैं (प्रेरित 3:6 के जैसा)। उसी तरह, दूसरे मसीही भी जिनको चंगाई का वरदान मिला था, बीमारों को जब भी वे सोचते थे कि यह चंगा करने का उचित समय है, चंगा करते थे। वैसे ही, जिनको अन्य-अन्य भाषा या भविष्यवाणी का वरदान प्राप्त था, उन्होंने वैसा अपने ही अधिकार के अंतर्गत किया (देखें 1 कुरिंथियों 14:32)। जब इन वरदानों का प्रयोग किया जाता था तो इसमें मन और इच्छा शामिल था; ये मसीही किसी भी प्रकार के दबाव व भावनाओं में नहीं बहते थे ताकि वे अनुचित रीति से व्यवहार न करें।

किसी भी समय परमेश्वर अपने लोगों की प्रार्थना के उत्तर में कार्य कर सकता है। प्रथम सदी की कलीसिया के समान वर्तमान कलीसिया में भी परमेश्वर का उसके लोगों के प्रार्थना का उत्तर देना, उसके कार्य का अलौकिक गुण है। वर्तमान मसीहियों और प्रथम सदी के मसीहियों की प्रार्थना के प्रत्युत्तर, जिनको अलौकिक सामर्थ प्राप्त था, के बीच केवल इतना अंतर था कि प्रथम सदी के मसीहियों ने इन वरदानों का प्रयोग अपने अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत किया था। परमेश्वर ने उनको ईश्वरीय विशेषाधिकार दिया था ताकि वे अपने वरदानों का प्रयोग अपनी इच्छा के अनुसार कर सकें। इस दृष्टिकोण से अलौकिक सामर्थ का कार्य बंद हो चुका है; अब हर एक व्यक्ति विशेष के पास परमेश्वर की सामर्थ में संक्रेदित करने का अधिकार नहीं है और वे अपनी समझबूझ से सामर्थ के कार्य नहीं कर सकते हैं। प्रथम सदी की कलीसिया में भी, जो व्यक्ति विशेष अलौकिक सामर्थ से परिपूर्ण थे वह भी परमेश्वर के अधीन थे। यदि वे वह आश्चर्यकर्म करते हैं जो परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध हो तो वह (परमेश्वर) चाहे तो उसमें हस्तक्षेप कर सकता था।

कुरिंथुस के मसीहियों को यह जानना आवश्यक था कि हर एक मसीही को पवित्र आत्मा ने आश्चर्यकर्म करने के लिए वरदान *(खारिस्माटा)* नहीं दिया था। जिनको आश्चर्यजनक रूप से आत्मा मिला था उनके बीच **उसी आत्मा** का कार्य विभिन्न रूपों में प्रकट होता था। हर एक मसीही को दूसरों के वरदानों का आदर करना चाहिए था और देह की विश्वास और उन्नति के लिए जो भी प्रकट किया जाए, उसमें उनको आनंदित होना चाहिए था। व्यक्ति विशेष को प्राप्त वरदानों के बावजूद, "उसी आत्मा" ने कुरिंथुस के विश्वासियों को एक देह में पिरोया। जिन लोगों को आत्मिक वरदान मिला था, पौलुस उनको शिक्षा दे रहा था। ऐसा लगता है कि पवित्र आत्मा से विशिष्ट रूप से भरे हुए मसीहियों को अपने वरदानों को नियंत्रण करने के बारे में पता था। पौलुस ने यह आवश्यक समझा कि वह इस बात पर विराम लगाएं कि विश्वासी आपस में यह कहकर न झगड़ें कि किसको सबसे अच्छा वरदान मिला है।

आयत 5, 6. "सेवा" (διακονία, *डायाकोनिया)* ही आत्मा के द्वारा दिए गए वरदानों का विषय था क्योंकि प्रभु ही समस्त भलाई का स्त्रोत है। पौलुस ने कहा कि मसीहियों को चकित नहीं होना चाहिए कि **सेवा भी कई प्रकार की है** और

उनके लिए विभिन्न वरदानों को देने वाला **प्रभु एक ही है**। भाई लोग अपने वरदानों में भिन्नता देख सकते थे और प्रभु द्वारा अपने सेवकों को दी गई विभिन्न "सेवाओं" के साथ उनका तालमेल बैठा सकते थे। उदाहरण के लिए कुछ प्रेरित थे, कुछ प्राचीन, कुछ सेवक, और कुछ सुसमाचार प्रचारक (देखें 12:29; इफिसियों 4:11)। परमेश्वर द्वारा आत्मा के भिन्न वरदानों को वितरित करने का परिणाम सेवकाई के लिए तत्पर और तैयार होना था। पौलुस कुरिन्थियों की व्यावहारिक बुद्धि को आकर्षित करता हुआ प्रतीत होता है। क्योंकि लोग अलग-अलग थे, और आत्मा ने हर एक को उपयुक्त वरदान दिए थे।

"एक ही आत्मा", "एक ही प्रभु" यीशु, और **एक ही परमेश्वर** जो "कई प्रकार के वरदान", "कई प्रकार की सेवा", और मसीहियों में **हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है** (12:4-6)। "हर प्रकार का प्रभाव" के स्थान पर KJV में 12:6 में "विभिन्न प्रकार के कार्य" आया है। जबकि CEV बिना घुमा फिरा कर कहता है, "और हम सब भिन्न कार्य कर सकते हैं। किंतु वही परमेश्वर हम सब में कार्य करता है और हम जो कुछ करते हैं उसमें हमारी सहायता करता है।" आत्मिक वरदान का होना इस बात का चिन्ह नहीं था कि वह व्यक्ति किसी उच्च आत्मिक स्तर पर था या इस बात का कि उस पर परमेश्वर की कोई विशेष कृपादृष्टि थी। आत्मिक वरदान कलीसिया के उत्थान के लिए थे, न कि उनको लेकर लोगों द्वारा इठलाने के लिए। इन सभी कार्यों के लिए परमेश्वर, मसीह, और पवित्र-आत्मा को उत्तरदायी बनाने के द्वारा पौलुस ने परमेश्वरत्व की एकता की पुष्टि की। परमेश्वर, यीशु, और पवित्र आत्मा के कार्य परस्पर गुत्थे हुए हैं। जबकि शब्द "त्रिएक" कहीं नहीं आता है, परन्तु समस्त नए नियम में परमेश्वरत्व के एक होने का विचार व्याप्त है।

पौलुस चाहता था कि मसीही एक ही देह में एक साथ बंधे होने के कारण एक दूसरे की सहायता करें, प्रोत्साहित करें। अन्य बातों के साथ-साथ आत्मिक वरदानों को मसीह की कलीसिया की एकता का सहायक होना था। कोई भी मसीही जो अपने आत्मिक वरदान को परमेश्वर की विशेष कृपादृष्टि के चिन्ह के रूप में देखता था, उसे परमेश्वर की कृपादृष्टि को औरों पर होने को भी स्वीकार करना था, चाहे परमेश्वर ने उन्हें कुछ अद्भुत करने की सामर्थ्य से आशीषित किया था या नहीं। परमेश्वर का अनुग्रह प्रत्येक आज्ञाकारी विश्वासी पर होता है।

आयत 7. पौलुस ने कहा कि आत्मा के वरदान **सब के लाभ पहुंचाने के लिए** थे। REB में आया है "किसी उपयोगी उद्देश्य के लिए।" परमेश्वर ने **आत्मा का प्रकाश** अर्थात, आत्मिक वरदान, उन व्यक्तियों की प्रशंसा के लिए नहीं दिए थे जिनके पास वे वरदान थे। भाइयों में स्पर्धा और मतभेद का कारण न हो कर, आत्मा के वरदान सबकी भलाई के लिए थे। पवित्र आत्मा का कार्य पृथक करने वाला या अलग होने का अनुभव करवाने वाला न हो कर, विश्वासियों को एक जुट करने और देह को सुदृढ़ करने के लिए था। पौलुस सावधानी से चर्चा का रुख बदल रहा था। "अब आत्मिक वरदानों के विषय" न कह कर, लगता है कि वह विचार कर रहा था कि, "अब सबके समान भलाई के विषय," या "अब देह की

एकता के विषय" कहे। कुरिन्थियों के आत्मिक वरदानों के होने और उनका प्रयोग करने के विषय का रवैया मण्डली में विभाजन की समस्या का सूचक था। वरदानों का वर्णन करना दिखाता है कि कुरिन्थी कलीसिया किस सीमा तक विभाजनों से ग्रस्त थी। प्रत्येक को सावधानी से देखना ज़रूरी है।

आयत 8. प्रेरित ने अपने सामान्य आग्रहों को आत्मा के विशिष्ट वरदानों को गिनवाने के द्वारा केन्द्रित किया, और 12:7 के "आत्मा का प्रकाश" के उल्लेख को और व्यापक किया। उसने किसी ऐसे विशेष चमत्कारिक वरदान के साथ आरंभ नहीं किया, जिसे कुरिन्थी उच्च आदर देते थे और जिसको लेकर उनमें स्पर्धा रहती थी। अपितु, पौलुस ने आरंभ किया उन साधारण वरदानों से जो देह के स्वास्थय के लिए बहुत मूल्यवान थे। उनमें हो रहे आत्मा के कार्य द्वारा कलीसिया में कुछ को **आत्मा के द्वारा बुद्धि की बातें** और अन्यों को **उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बातें** दी जाती थीं। यह "सब के लाभ पहुंचाने के लिए हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया" जाना है; परन्तु कम चमत्कारिक होने के कारण इन्होंने उनके बीच जिनके पास ये थीं और जो इनका प्रकटीकरण देखते थे, उनमें कम उत्सुकता उत्पन्न की।

यह जानना लाभाप्रद होगा कि पौलुस का ज्ञान की बातों की अपेक्षा बुद्धि की बातों से क्या अर्थ था। संभवतः बुद्धि "प्रेरणा द्वारा ज्ञान के *तात्पर्यों* का भविष्यवाणी या ज्ञान के शब्दों द्वारा प्रगटीकरण देख पाने की योग्यता है," अर्थात "औरों को निर्देष दे पाने की योग्यता की परमेश्वर के वचन को व्यक्तिगत जीवनों और मण्डलियों में कैसे उपयोगी किया जाए।"[5] जो स्पष्ट है वह यह है कि बुद्धि और ज्ञान जिनका यहाँ उल्लेख हुआ है उन का मनुष्यों की बुद्धिमता के साथ भ्रम नहीं होना चाहिए। इस युग के ज्ञान का आत्मा के वरदानों से कोई लेना-देना नहीं है।

पौलुस ने बुद्धि और ज्ञान का स्वाभाविक होने और आत्मा के चमात्कारिक प्रकाश से होने में कोई भेद नहीं किया। कोई संदेह नहीं कि कुरिन्थुस के विश्वासियों में भेद प्रत्यक्ष थे। अन्यथा प्रेरित को उन को संबोधित करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। हम पवित्र आत्मा द्वारा अलौकिक बुद्धिमता या आत्मा के वारदान दिए जाने के लिए किसी कसौटी के प्रयोग का कोई उल्लेख नहीं पाते हैं। क्या पौलुस ने प्रेरित होने के अपने ही अधिकार के अन्तर्गत कुछ व्यक्तियों पर हाथ रखे थे और उन्हें कलीसिया में सेवा करने के लिए नियुक्त किया था जैसा कि पतरस और यूहन्ना ने सामरियों में किया था (प्रेरितों 8:14-18)? यदि इस समय प्रेरितों के हाथ रखने से चमत्कारिक वरदान प्रदान नहीं किए गए, तो हमें इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए बाध्य होना पड़ेगा कि पवित्र-आत्मा वरदानों के लिए विश्वासियों को अनियमित विधि से चुनता है, जिस भी रहस्यमय ढंग से उसे उचित लगता है। ऐसी स्थिति में, विश्वासियों को किसी प्रातः उठने पर ज्ञात होता कि उनके पास कोई विलक्षण क्षमता है जिसका न तो उन्होंने अनुरोध किया था और न ही जिसके बारे में वे समझते थे। किंतु, बाद में पौलुस द्वारा इस विषय में समझ-बूझ और व्यवस्थित होने के लिए कहना (1 कुरिन्थियों 14:40)

संकेत करता है कि आत्मा के वरदान कुरिन्थुस में प्रेरितों के निर्धारण से आए थे।

आयत 9. बुद्धि तथा ज्ञान के समान, अपेक्षित था कि **विश्वास** प्रत्येक मसीही में स्वाभाविक रीति से होगा। किंतु यहाँ जिस "विश्वास" का प्रश्न है, वह पहले ही उल्लेखित बुद्धि और ज्ञान के समान, **उसी आत्मा से** दिया जाने वाला विशेष वरदान है। संभवतः "आत्मिक वरदान" के रूप में विश्वास में उपलब्ध चमत्कारिक बात थी प्रलोभनों का, या मसीही सिद्धांतों पर आने वाली असामान्य चुनौतियों का प्रतिरोध कर पाने की क्षमता रखना। चमत्कारिक अंश वाले विश्वास से, उदाहरणस्वरूप, विश्वासियों को यूनानी दार्शनिकों का खंडन करने में सहायता मिली होगी। आज कोई मसीही इस विषय में निश्चित नहीं हो पाता है कि वह आत्मा के द्वारा प्रदान किए गए विश्वास के बारे में कुछ विशेष जानता या जानती है कि नहीं, उस सामान्य विश्वास की तुलना में जो मसीही अंगीकार के लिए मूलभूत है। परन्तु क्योंकि जिस विश्वास की बात हो रही है वह कुरिन्थुस की कलीसिया में पवित्र-आत्मा द्वारा दिया गया विशेष विश्वास था, इसलिए हम इस बात के लिए निश्चित हो सकते हैं कि वह एक चमत्कारी वरदान था।

आत्मा के कम अचरज भरे प्रगटीकरणों से व्यवहार करने के पश्चात - ऐसे वरदान जिन पर अपना होने का दावा करने की कोई विशेष लालसा नहीं देखी जाती थी - पौलुस उन वरदानों की ओर बढ़ा जिनके लिए कुरिन्थुस के विश्वासियों में परस्पर स्पर्धा हो रही थी। विश्वास, बुद्धि, और ज्ञान को **चंगा करने के वरदान** से अधिक वरीयता देने के द्वारा, प्रेरित ने दिखाया कि न केवल सभी वरदान परमेश्वर से हैं, वरन यह कि आरंभिक वरदान अधिक वांछनीय हैं।

पौलुस द्वारा बहुवचन का प्रयोग "चंगा करने के वरदान" साधारण शैली की बात हो सकती है, परन्तु संदर्भ दिखाता है कि इसका महत्व है। हो सकता है कि कुछ चंगाई को तभी ला पाते थे जब कुछ विशेष परिस्थितियाँ होती थीं। जो स्पष्ट है वह यह है कि चंगा करने के वरदानों के कारण जिनके पास ये वरदान थे उन्हें कलीसिया में उच्च दर्जा दिया जा रहा था। पौलुस ने बलपूर्वक कहा कि ऐसा होना कभी वरदानों के देने के पीछे का तात्पर्य नहीं था; सभी वरदान समस्त देह की उन्नति के लिए थे। "चंगाई के वरदान" का उल्लेख ऐसी योग्यताओं से परिचय करवाता है जिनका होना किसी भी सहभागिता, मसीही या किसी अन्य, में हलचल उत्पन्न करता।

आयत 10. प्रेरित ने कम प्रमुख आत्मिक वरदानों (बुद्धि, ज्ञान, और विश्वास) को उनके महत्व को रेखांकित करने और अन्य आश्चर्यजनक वरदानों के संबंध में उत्तेजना को कम करने के लिए पहले रखा होगा। **सामर्थ के काम करने की शक्ति** एक वृहद पारिभाषिक वाक्यांश प्रतीत होता है जिसके अन्तर्गत निम्न वरदान प्रबंधित थे। ऐसा होने पर, "चंगाई के वरदान" अप्रबंधित प्रतीत होता है। यह अपेक्षित है कि यह "सामर्थ के काम करने की शक्ति" के बाद आएगा न कि उससे पहले। कुरिन्थुस के मसीहियों ने चंगाई के वरदान की अन्य वरदानों की अपेक्षा अधिक लालसा से इच्छा रखी होगी। जीवन को दीर्घकालीन बनाने की व्यक्तिगत इच्छा के अनुसार, चंगाई देने का वरदान पवित्र-आत्मा द्वारा दिए जाने वाले

वरदानों में सबसे अधिक चाहे जाने वाला वरदान रहा होगा। यीशु और प्रेरितों द्वारा किए गए आश्चर्यकर्मों के अभिलेखों में से अधिकांश चंगाई के आश्चर्यकर्म हैं।

जिस भी कारण से हो, पौलुस ने "चंगाई के वरदान" को अधिक सामान्य वाक्यांश "सामर्थ के काम करने की शक्ति" से पहले रखा। इसके पश्चात उसने चमत्कारिक वरदानों को कुरिन्थुस के मसीहियों के अनुभव के अनुसार भिन्न प्रगटीकरणों में रखा।

अन्य चमत्कारी वरदानों में, कुरिन्थुस के कुछ लोगों के पास **भविष्यद्वाणी** करने का वरदान था। प्राम्भिक कलीसिया में भविष्यद्वक्ताओं का आदर किया जाता था; वे अत्यंत आवश्यक सेवकाई करते थे (इफिसियों 2:20; 4:11)। जैसे कि अगबुस ने भविष्य को बताया था (उदाहरणस्वरूप, प्रेरितों 11:28; 21:10, 11), परन्तु अधिक सामान्य था भविष्यद्वक्ताओं द्वारा शिक्षा दिया जाना (प्रेरितों 15:32)। एक मसीही शिक्षक के पास पवित्र-आत्मा द्वारा दी गई चमत्कारिक शक्ति होना आवश्यक नहीं था, परन्तु भविष्यद्वक्ता के पास था। जेम्स ग्रीन्बरी का निष्कर्ष लगभग निश्चित है:

> ऐसा कोई बाध्य कर देने वाला प्रमाण नहीं है कि समस्त [नए नियम] में, भविष्यद्वाणी समान रूप से प्रकाशन द्वारा, प्रेरणा द्वारा, और आधिकारिक होने के अतिरिक्त और कुछ थी।[6]

भविष्यवाणी परमेश्वर द्वारा प्राचीन समय से अपने सेवकों को दिया गया वरदान है; परन्तु दोनों, नए एवं पुराने नियम में, लोग परमेश्वर से सन्देश पाने का दावा कर सकते थे जबकि वास्तव में वे अपने मन से बोल रहे होते थे (यिर्मयाह 27:16)। इसलिए यह पवित्र-आत्मा के लिए उचित था कि वह लोगों को **आत्माओं की परख** के वरदान दे। प्रथम-शताब्दी की कलीसिया के लिए भविष्यवाणी महत्वपूर्ण थी। कुछ भविष्यद्वक्ता तो कुछ विशेष कलीसियाओं में स्थिर बने रहते थे और वहाँ पर उनके कार्य निर्धारित थे। अन्य, चाहे सच्चे अथवा झूठे, एक से दूसरे स्थान परा घूमते फिरते रहते थे (1 यूहन्ना 4:1)।

पौलुस ने वरदानों में से सबसे आश्चर्यजनक को, कम से कम कुरिन्थियों के दृष्टिकोण के अनुसार, अन्त के लिए बचा रखा। मसीहियों में **अनेक प्रकार की भाषा** बोल पाने की योग्यता की स्पर्धा रहती थी। पौलुस ने इन भाषाओं को भिन्न "प्रकार" की समझा। क्योंकि वर्तमान सँसार में अनुभव किए जाने वाले उत्तेजनापूर्ण उच्चारणों में लगभग समानता है, इसलिए कुरिन्थुस में पाए जाने वाले उत्तेजनापूर्ण उच्चारणों में "प्रकार" की भिन्नता होने की अपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। आज कुछ धार्मिक समूहों द्वारा जिन उच्चारणों का दावा किया जाता है वे भावनात्मक प्रतीत होते हैं (कुछ उन्हें "धार्मिक" कहते हैं), परन्तु "भाषा" के ऐसे प्रदर्शन में कुछ समझबूझ की बातों के होने की अपेक्षा नहीं की जा सकती है। जिन भाषाओं की चर्चा पौलुस ने की वे "अनेक प्रकार" की थीं, और इससे यह संकेत मिलता है कि उनके शब्दों के समझे जा सकने वाले अर्थ होते थे।

पाठकों के लिए भाषाओं की इस घटना को समझने में बहुत सहायता

मिलती है यदि वे इस बात का ध्यान करें कि पौलुस ने उन के "अर्थ बताने" को भी महत्व दिया। कुरिन्थुस में कुछ को "आत्माओं" की परख होनी चाहिए थी, अर्थात, उन्हें पहचान सकें जो आत्मिक सन्देश का दावा करते थे और जिनके पास वास्तव में आत्मिक सन्देश होता था। भाइयों को प्रत्येक उस दावे को स्वीकार नहीं करना था कि दावा करने वाला आधिकारिक रीति से पवित्र-आत्मा के द्वारा बोल रहा है। इसी प्रकार से, यदि भाषाएँ कलीसिया की उन्नति के लिए थीं, तो उनका अर्थ बताना अनिवार्य था। पवित्र-आत्मा के द्वारा वरदान पाए हुए मसीहियों को दी जाने वाले मौखिक ध्वनियाँ विविध प्रकार का हकलाना नहीं था; वे अर्थपूर्ण थीं। वे "अनेक प्रकार की भाषा" भाषाएँ थीं; उनसे समझदारी के विचारों का संचार होता था।

नए नियम की पत्रियों में से, भाषाएँ (चंगाई और भविष्यद्वाणी के विपरीत) केवल 1 कुरिन्थियों में उल्लेखित हैं। कुरिन्थियों को दिए गए इस वरदान की अनुपमता के कारण उसे परखने में और भी अधिक सावधानी बरती जानी चाहिए। पौलुस की पत्रियों के वर्तमान पाठक होने के नाते, हम यहाँ दिए गए उसके निर्देशों से केवल इतना लाभ उठा सकते हैं कि यह समझ पाएं कि कुरिन्थुस की "अनेक प्रकार" की भाषाएँ क्या थीं।

नए नियम में अन्य स्थानों पर, पारिभाषिक शब्द "भाषाएँ" केवल प्रेरितों 2:7, 8; 10:46; और 19:6 में आता है। प्रेरितों 2 में यह स्पष्टतः भाषाओं से संबंधित है। इस सिद्धांत के प्रयोग के द्वारा कि स्पष्ट खण्डों द्वारा हमें कठिन को समझने में सहायता मिलती है, हमें "भाषाओं" को अन्य स्थानों प्रेरितों और 1 कुरिन्थियों 12-14 में भाषा ही मानना चाहिए। बिना किसी अन्य स्पष्टिकरण के, यह तर्क देना कि भाषाओं का वरदान प्रेरितों 2 में एक बात है और 1 कुरिन्थियों में बिलकुल भिन्न बात है नए नियम के अपने आप को स्पष्ट संचार करने पर प्रश्न उठाना है।[7] डेविड ई. गारलैंड अपने निष्कर्ष में सही था कि पौलुस का भाषा को "पवित्र-आत्मा की प्रेरणा से बोली गई भाषा न कि बिना पहचान और बिना भाषा का उच्चारण। यह आत्मा में अर्थहीन तुतलाना नहीं है" समझना था।[8]

रॉबर्ट एच. गुंड्रे का एक लेख जाँच करता है कि "नए नियम में वर्णित विचित्र उच्चारणों में बोलना क्या वास्तव में यूनानी धर्मों में और संभवतः पुराने नियम की भविष्यवाणियों में उत्तेजनापूर्ण उच्चारणों के समान था।" उसमें लिखा है, "... प्रेरित पौलुस इस घटना को 'उत्तेजनापूर्ण उच्चारणों' के समान नहीं देखता या वर्णन करता है, परन्तु किसी विदेशी वक्ता को आश्चर्यकर्म द्वारा कोई मानवीय भाषा बोलने की योग्यता का दिया जाना।"[9]

आयत 11. कुरिन्थुस के मसीहियों में प्रगट वरदानों के संक्षिप्तीकरण में मसीह की देह की एकता बहुत प्रमुख स्थान पाती है। उसने लिखा, **परन्तु ये सब प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा करवाता है, और जिसे जो चाहता है वह बांट देता है**। अधिक वांछनीय वरदानों के लिए मसीहियों में स्पर्धा यह संकेत करती थी कि वे पवित्र-आत्मा द्वारा वितरित की गई योग्यताओं को गलत समझ रहे थे

और गलत प्रयोग भी कर रहे थे।

यह तथ्य कि देह, कलीसिया, के भिन्न सदस्यों के पास भिन्न योग्यताएं हैं, देह की अनिवार्य एकता को कम नहीं कर देता है। कलीसिया के सभी सदस्यों को, देह के सभी अंगों के समान, एक साथ मिलकर कार्य करना है। जब मसीह की देह के एक सदस्य को किसी विशेष योग्यता की आशीष मिलती है, तो यह सारी देह के लिए आनंदित होने का अवसर होता है।

"देह एक है" (12:12, 13)

12क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है और उसके अंग बहुत से हैं, और उस एक देह के सब अंग, बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह हैं, उसी प्रकार मसीह भी है। 13क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या युनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया।

आयत 12. हम अपेक्षा कर सकते थे कि पौलुस, 12:1-11 के संकलनस्वरूप, 12:12 में कहेगा, "ऐसा ही कलीसिया के साथ भी है।" प्रेरित के पिछले विवरण में कलीसिया की एकता आधारभूत थी, परन्तु अब वह एक भिन्न दिशा में चला। यह कहने कि अपेक्षा कि "ऐसा ही कलीसिया के साथ भी है" उसने लिखा, **उसी प्रकार मसीह भी है।** जिसने कुरिन्थुस में मण्डली को रोपा था, वही मसीह तथा उसकी देह के बीच एकता पर भी बल दे रहा था। देह का अंग होने का अर्थ था मसीह के साथ जुड़ जाना।

ऐस्क्लेपियों के स्थान पर, जिसमें प्राचीन कुरिन्थुस की पश्चिमी दीवार का चंगाई का मंदिर सम्मिलित था, पुरातत्वविदों को पकाई हुई मिट्टी से बने शरीर के अंगों का एक छिपा हुआ भण्डार मिला है। संभवतः उन्हें उन श्रद्धालुओं ने वहाँ रखा था जो अपने कष्ट का अपने देवता के लिए स्मारक छोड़ना चाहते थे, या फिर उससे मिली चंगाई के लिए धन्यवाद चिन्ह छोड़ना चाहते थे। कुरिन्थुस के वर्तमान पुरातत्व स्थान पर स्थित एक छोटे संग्रहालय में पक्काई हुई मिट्टी से बने उन शरीर के अंगों की प्रदर्शनी लगी हुई है। यह मानना कठिन नहीं है कि पौलुस उस मंदिर में गया था और औषध के देवता ऐस्क्लेपुस के आराधकों द्वारा छोड़ी गई आकृतियों के संग्रह को उसने देखा था। जेरोम मर्फ़ी-ओ'कॉनर ने धारण बनाई,

> इस पृष्ठभूमि में पौलुस ने देह से अलग किए गए अंगों के संग्रह को ऐस्क्लेपियों में देखा होगा, ऐसे चिन्ह के रूप में जैसा मसीही को कभी नहीं होना चाहिए: "मृतक", विभाजित, प्रेम देने और पाने से रहित। यहाँ से फिर उस सारी देह के तुलनात्मक चित्रण तक पहुँचना सरल कदम रहा होगा, जिसमें प्रत्येक अंग की विशिष्ट पहचान साझा जीवन में जड़ें जमाए हुए है।[10]

आयत 13. पौलुस ने अपने पाठकों के समक्ष कई प्रश्न रखे। मसीह के आज्ञाकारी होने से मानवीय भिन्नताओं को समाप्त करने के पश्चात, क्या ये भाई देह को पवित्र-आत्मा के वरदानों के आधार पर विभाजित करने का दुःसाहस कर सकते थे? क्या वे नहीं जानते थे कि उन सब ने **एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया?** कलीसिया को यह आवश्यकता नहीं थी कि पौलुस यह बहस करे कि देह का सदस्य होने के लिए विश्वास की आवश्यकता थी जिसकी चरम सीमा बपतिस्मा था। वे इस बात से अवगत थे कि बपतिस्मा मसीह में नए जीवन के आरंभ का सूचक था, और उन्हें सँसार से पृथक करता था। प्रेरित ने पहले भी ऐसी ही श्रेणियों (यहूदी/अन्यजाति, दास/स्वतंत्र) का उपयोग कलीसिया के सदस्यों को नए सिद्धांतों के अनुसार जीवन जीने के लिए चिताने के लिए किया था (7:18-24); अब वह उन्हीं सिद्धांतों को देह की सदस्यता और उसमें भागीदारी पर लागू कर रहा था।

कुछ यह मानते हैं कि 12:13 में पौलुस यह कहना चाह रहा था कि सभी कुरिन्थियों ने *पवित्र आत्मा में* बपतिस्मा लिया था। उदाहरण के लिए, जैक कोट्रेरेल ने इस परिच्छेद के आधार पर यह तर्क दिया कि प्रत्येक मसीही को बपतिस्मे के समय प्राप्त होने वाला पवित्र-आत्मा का वरदान ही पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाना है। उसने कहा कि प्रेरितों 1:5 की प्रतिज्ञा ("तुम पवित्रात्मा से बपतिस्मा पाओगे") तब पूरी हो गई थी जब पतरस ने प्रथम सुसमाचार सन्देश को समाप्त किया और लोगों ने सुसमाचार का पालन किया तथा बपतिस्मा लिया (प्रेरितों 2:38-41)। कोट्रेरेल के अनुसार, जो प्रेरितों के साथ पिन्तेकुस्त के दिन हुआ, वह "पवित्र-आत्मा से सामर्थ्य पाने" (प्रेरितों 1:8) का लघु वरदान था।[11] इस दृष्टिकोण के समर्थन में, उसने कहा कि कुरनेलियुस के घर में पवित्र आत्मा के दिए जाने से पतरस को स्मरण हो आया कि पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की सार्वजनिक प्रतिज्ञा यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की शिक्षाओं का विषय होता था (प्रेरितों 11:15, 16)।

कोट्रेरेल ने कहा कि पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरितों में तथा कुरनेलियुस के घर में होने वाली एक समान घटना, चिन्हों के साथ पवित्र आत्मा का दिया जाना था। उसने बल दे कर कहा कि आश्चर्यकर्मों को "पवित्र आत्मा के बपतिस्मे" से नहीं जोड़ा जाना चाहिए। कोट्रेरेल सेशानिस्ट हैं; अर्थात वे यह नहीं मानते हैं कि प्रेरितों के बाद की कलीसिया में मसीहियों को व्यक्तिगत रीति से अपने विवेकानुसार आश्चर्यकर्म करने की शक्ति परमेश्वर से मिलती है। फिर भी कोट्रेरेल द्वारा प्रस्तुत की गई बात में कम से कम चार बातों की कमी पाई जाती है।

प्रथम, यीशु ने प्रेरितों के समक्ष अपने पुनरुत्थान के बाद के अंतिम प्रकटीकरण में पवित्र आत्मा में बपतिस्मे की बात कही थी। उसने इस विशिष्ट समूह को (प्रेरितों 1:2) आज्ञा दी थी कि वे यरूशलेम में बने रहें जब तक वे "पवित्रात्मा से बपतिस्मा" न पाएँ (प्रेरितों 1:5), जब तक उन्हें पवित्र आत्मा से सामर्थ्य न मिले और वे उसके गवाह न बन जाएँ (प्रेरितों 1:8)। इसलिए यह कहना कि प्रेरितों 1:2-8 की प्रतिज्ञाएँ तब पूरी हुई थीं जब पिन्तेकुस्त के दिन

लोगों की भीड़ ने पतरस के प्रचार के प्रत्युत्तर में बपतिस्मा लिया (प्रेरितों 2:41) बढ़ा-चढ़ा कर व्याख्या करना होगा।

दूसरा, पानी से बपतिसमे का उल्लेख 1 कुरिन्थियों के आरंभ में हुआ था और इसका उल्लेख अन्य पत्रियों में भी मिलता है। पौलुस ने कुरिन्थियों के मसीहियों के विषय कहा, "... परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए, और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे" (6:11)। उसने बपतिस्मे को धोए जाने के समान बताया, जो ऐसा चित्रण है जिसे पवित्र आत्मा के बपतिस्मे पर सरलता से लागू नहीं किया जा सकता है। न केवल प्रेरित ने कहा कि विश्वासी जब धोए गए तब वे पवित्र हुए तथा धर्मी ठहरे, परन्तु उसने यह भी इंगित किया कि ऐसा "परमेश्वर के आत्मा" के द्वारा हुआ। इसी प्रकार से, पौलुस ने कहा कि "नए जन्म के स्नान, और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने" वह विधि है जिससे परमेश्वर ने अपनी दया कार्यान्वित की और "हमें बचाया" (तीतुस 3:5)। पौलुस ने कहा कि कुरिन्थी विश्वासियों ने "एक ही आत्मा के द्वारा" बपतिस्मा पाया था (1 कुरिन्थियों 12:13), परन्तु इससे यह प्रमाणित नहीं होता है कि वह पानी के बपतिस्मे की तुलना में पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की बात कर रहा था। पौलुस ने बपतिस्मे को धोए जाने के समाने देखा, और यह सदा पवित्र आत्मा पाने के साथ जुड़ा हुआ था। पाठकों को पौलुस द्वारा "बपतिस्मे" शब्द के प्रयोग को तभी अलंकार के समान देखना चाहिए जब संदर्भ ऐसी माँग करे।

तीसरा, व्याख्या के विषय में, जब नए नियम में बपतिस्मे का उल्लेख होता है, सामान्य संदर्भ पानी के बपतिस्मे से होता है। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला जल से बपतिस्मा देता था; यही यीशु के शिष्य भी करते थे (यूहन्ना 4:1, 2)। फिलिप्पुस और कुश देश का खोजा "किसी जल की जगह पहुँचे," और सुसमाचार प्रचारक ने उसे बपतिस्मा दिया (प्रेरितों 8:36)। अनेकों परिच्छेद इस तथ्य को सिखाते हैं। 1 कुरिन्थियों 12:13 के बपतिस्मा को निःसंदेह पानी का बप्तिस्मा माना जा सकता है।

चौथा, पवित्र आत्मा में बपतिस्मा, नए नियम में केवल यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के शब्दों से जुड़ी प्रतिज्ञा के पूरा होने के साथ ही आता है (मत्ती 3:11; मरकुस 1:8; लूका 3:16; प्रेरितों 1:5; 11:16)। यीशु ने अपने सभी अनुयायियों को पवित्र आत्मा से उतना ही बपतिस्मा दिया जितना उन्होंने उन्हें आग से दिया था। पतरस ने जिसका विवरण प्रेरितों 11:15-17 में दिया वह एक असाधारण घटना थी, यह दिखाने के लिए कि अन्यजातियों से आए मसीही विश्वासियों को पानी से बपतिस्मा देने के लिए मना नहीं करना है (प्रेरितों 10:47)। जब कुरनेलियुस और उसके घराने को "यीशु मसीह ने नाम में" पानी से बपतिस्मा दिया गया (प्रेरितों 10:48), तब ही उन्हें, कुरिन्थी विश्वासियों के समान, **एक ही आत्मा पिलाया गया**। पानी के बपतिस्मे के पश्चात ही वे धोए गए, पवित्र किए गए, और धर्मी ठहराए गए। अन्यथा उनका पानी में बपतिस्मा लेना व्यर्थ होता।

"अनेक अंग, परन्तु एक देह" (12:14-26)

आत्मिक वरदानों को सूचीबद्ध करने और उन्हें "सब के लाभ पहुंचाने के लिए हर एक को आत्मा का प्रकाश" (12:7) घोषित करने के पश्चात, पौलुस ने आगे अपने कहे हुए के कुछ व्यावाहरिक तात्पर्यों को विकसित किया। उसने 12:12 में पुष्टि की "देह तो एक है"; परन्तु कलीसिया को, शारीरिक देह के समान, अनेकों अंगों के उद्देश्य के साथ सुचारू रूप से कार्य करने की आवश्यकता होती है। कुरिन्थुस के मसीही केवल उन वरदानों पर ध्यान लगाने के द्वारा जिन्हें वे वांछनीय मानते थे, देह की पूर्णता को खोखला कर रहे थे। अपनी सूची में भाषाओं के वरदान को सबसे अन्त में रखने के द्वारा (12:10), पौलुस ने यह नहीं जताया था कि वह पवित्र आत्मा द्वारा दिया जाने वाला गौण वरदान है, क्योंकि कोई भी वरदान गौण नहीं थे। वह यह कह रहा था कि कुरिन्थुस के कुछ लोग उस वरदान को आवश्यकता से अधिक महत्व दे रहे थे। कुरिन्थी पवित्र आत्मा द्वारा कलीसिया की उन्नत्ति के लिए दिए गए वरदानों के मूल्य निर्धारण कर रहे थे, और इससे देह में विभाजन पनप रहा था। जब उसने 1 कुरिन्थियों लिखा था तब प्रेरित के मन से देह की एकता कभी दूर नहीं थी, परन्तु एकता के प्रति उसकी चिंता इससे अधिक विदित और कहीं नहीं है जितनी कि देह के लिए आत्मिक वरदानों की उसकी चर्चा में है।

[14]इसलिए कि देह में एक ही अंग नहीं, परन्तु बहुत से हैं। [15]यदि पांव कहे "मैं हाथ नहीं, इसलिए देह का नहीं," तो क्या वह इस कारण देह का नहीं? [16]और यदि कान कहे; "मैं आंख नहीं, इसलिए देह का नहीं," तो क्या वह इस कारण देह का नहीं? [17]यदि सारी देह आंख ही होती तो सुनना कहां से होता? यदि सारी देह कान ही होती तो सूंघना कहां होता? [18]परन्तु सचमुच परमेश्वर ने अंगो को अपनी इच्छा के अनुसार एक एक कर के देह में रखा है। [19]यदि वे सब एक ही अंग होते, तो देह कहां होती? [20]परन्तु अब अंग तो बहुत से हैं, परन्तु देह एक ही है। [21]आंख हाथ से नहीं कह सकती, "मुझे तेरी आवश्यकता नहीं," और न सिर पांवों से कह सकता है, "मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं।" [22]परन्तु देह के वे अंग जो दूसरों से निर्बल लगते हैं, बहुत ही आवश्यक हैं। [23]और देह के जिन अंगो को हम आदर के योग्य नहीं समझते हैं उन्ही को हम अधिक आदर देते हैं; और हमारे शोभाहीन अंग और भी बहुत शोभायमान हो जाते हैं, [24]फिर भी हमारे शोभायमान अंगों को इस की आवश्यकता नहीं। परन्तु परमेश्वर ने देह को ऐसा बना दिया है, कि जिस अंग को आदर की घटी थी उसी को और भी बहुत आदर मिले। [25]ताकि देह में फूट न पड़े, परन्तु अंग एक दूसरे की बराबर चिन्ता करें। [26]इसलिए यदि एक अंग दु:ख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दु:ख पाते हैं; और यदि एक अंग की बड़ाई होती है, तो उसके साथ सब अंग आनन्द मनाते हैं।

आयत 14. पौलुस चाहता था कि ये मसीही एक **देह** के स्वभाव को, और उसके **बहुत से** अंगों में से प्रत्येक के महत्व को समझें। मसीह की देह के भले-

स्वास्थ्य के लिए यह अनिवार्य था कि प्रत्येक मसीही, उस पूर्णता में जिससे कलीसिया बनती है, अपने अपने भाग को समझे। कलीसिया के प्रत्येक सदस्य को अन्य मसीहियों की भूमिका की सराहना करना आवश्यक था; और अवसरानुसार, प्रत्येक को दूसरों के महत्व को स्वीकार करना था। यह प्राथमिक महत्व की बात थी कि कुरिन्थी संपूर्ण की भलाई के लिए एक दूसरे की चिंता करने की धारणा को स्वीकार करें। किसी को भी अधिकार नहीं जताना था; प्रत्येक को अपना योगदान देना था। मसीही एक दूसरे के साथ स्पर्धा में नहीं थे। किसी एक विश्वासी की आशीष सबके लिए आशीष थी।

आर्थिक रीति से संपन्न यूनानी-रोमी समाज के प्रचार की एक धारणा थी कि जब कुछ नागरिक संपन्न होते थे तो उससे होने वाले लाभ नीचे सब पर टपक कर जाते थे। यीशु के जन्म के समय के समीप, रोमी इतिहासकार लिवे (59-17 बी.सी.) ने रोम के उच्च-वर्ग के सदस्यों के विशेषाधिकारों को न्यायसंगत ठहारने के लिए एक रोमी सभासद द्वारा सुनाई गई कहानी बताई:

> बात उन दिनों की है जब मनुष्य की देह के सभी अंग परस्पर सहमत नहीं रहते थे, जैसा वर्तमान में है, परन्तु प्रत्येक का अपना विचार और वाणी थी, अन्य अंगों को यह अनुचित लगा कि उनका काम पेट के लिए सब कुछ उपलब्ध करवाने की चिंता करना और फिर उपलब्ध करवाना था, जबकि पेट उनके मध्य में आराम से बिना कुछ कार्य किए रहता था और जो भली वस्तुएँ उसे दी जाती थीं उनका आनन्द लेता था; इसलिए उन सब ने मिलकर षडयंत्र रचा कि हाथ कोई भी भोजन मुँह तक नहीं पहुँचाएंगे, न ही मुँह, यदि उसे कुछ दिया जाए, तो उसे स्वीकार करेगा, और जो उन तक पहुँचेगा, दांत उसे चबाएंगे नहीं। अपने इस क्रुद्ध भाव से वे पेट को अधीनता में लाना माँगते थे, परन्तु ऐसा करने से वे स्वयं तथा शेष सारी देह भी अत्यंत दुर्बलता में पहुँच गई। इससे यह स्पष्ट हो गया कि पेट को भी करने के लिए कुछ कम महत्वपूर्ण कार्य नहीं था, और वह स्वयं भी उतना ही पोषण पाता था जितना उससे औरों को मिलता था, शरीर के अन्य अंगों को देने के द्वारा जिनसे हम जीवित रहते और बढ़ते हैं ...[12]

आर्थिक दायरे में इतिहासकार की दलीलों पर प्रश्न उठाए जा सकते हैं, परन्तु यह सत्य है कि कलीसिया की समस्त देह परमेश्वर द्वारा व्यक्तियों को दिए गए निज वरदानों से लाभान्वित होती है। पौलुस लिवे द्वारा प्रस्तुत की गई दलील से अवगत रहा हो अथवा नहीं, परन्तु यह यूनानी-रोमी समाज में सामान्य था कि शरीर के भिन्न कार्यकारी अंगों के कार्य करने को समस्त के अच्छे और सामाजिक भलाई तथा उन्नत्ति के लिए लागू किया जाए।

आयत 15. विचारों की एक श्रंखला के साथ, पौलुस ने परस्पर आवश्यकता और लाभ के सत्य पर बल दिया। उसने दिखाया कि **पाँव** का कार्य **हाथ** के कार्य के समान प्रमुख तो नहीं है, परन्तु फिर भी उतना ही आवश्यक है। यदि पाँव निर्णय करे, **"इसलिए देह का नहीं"**, तो इससे शरीर के लिए उसका योगदान घट

नहीं जाएगा। न तो यह संभव है और न ही वांछनीय कि पांव और हाथ में तुलानात्मक आँकलन किया जाए। यह निश्चित है कि किसी कार्य की उपयोगिता उसकी प्रत्यक्षता के अनुसार नहीं होती है। समस्याएँ तब उठती हैं जब शरीर का एक अंग - इस स्थिति में, पाँव- यह मान ले कि उसे उसके कार्य के अनुरूप महत्व नहीं मिल रहा है। प्रेरित की बात स्पष्ट है: देह के किसी भी अंग द्वारा, यह भुला कर कि वह समस्त देह के साथ ऐसा बंधा हुआ है कि कभी पृथक नहीं हो सकता है, अपना निज महत्व ढूँढना मूर्खता की पराकाष्ठता है। शरीर का कई अंग समस्त से पृथक होकर उन्नत नहीं हो सकता है।

पौलुस की दलीलें कुरिन्थुस की कलीसिया में पाए जाने वाली तुच्छ डाह और विभाजनों के प्रति उसका प्रत्युत्तर थीं। जिनके पास अधिक प्रत्यक्ष आत्मिक वरदान थे उन्हें कम प्रत्यक्ष वरदानों को गौण समझ कर उनका आँकलन कम महत्वपूर्ण नहीं करना था। इसके विपरीत, जिनके वरदान सार्वजनिक रीति से कम आकर्षक थे, उन्हें अधिक आकर्षक का लालच नहीं करना था।

आयत 16. पौलुस के चित्रण का पहला भाग पाँव और हाथ को साथ रखता है; दूसरा दो इन्द्रियों **कान** और **आँख** पर केन्द्रित है। प्रेरित देह के अंगों में असमान प्रकार वालों में निर्भरता की तुलना करना नहीं चाह रहा था। वह यह दिखा रहा था कि कलीसिया का भला-स्वास्थ्य उन व्यक्तियों से होता है जिन से मिलकर कलीसिया बनती है। तुलनाएँ बाद में की गईं (12:21); परन्तु इस समय पौलुस ने पाँव और कान का चित्रण उनकी स्वतंत्रता को दिखाने के लिए किया। चित्रण में, पाँव को हाथ के कार्य के विषय कुछ रुचि या सराहना न होना दिखाया गया है, न ही कान की आँख के प्रति कोई रुचि है।

प्रेरित के चित्रण में, पाँव और कान अपने-अपने छोटे से सँसार में बन्द हैं, इस बात से अनजान और बेपरवाह कि वे संपूर्ण से प्राप्त करते और उसे देते हैं। पृथक होना उसके लिए सद्‌गुण है जो कोई सीमान्त क्षेत्र स्थापित कर रहा है, परन्तु यह उनके लोगों के समाज के लिए उतना अच्छा कार्य नहीं करता है जिन्हें आत्मिक, भावनात्मक, और भौतिक समृद्धि के लिए एक दूसरे पर निर्भर रहना पड़ता है। पाँव और कान को व्यक्तित्व देना कुरिन्थुस के कुछ आत्मिक वरदान पाए हुए भाइयों की संवेदनहीनता का प्रतीक है।

आयत 17. पौलुस को कई रुचि नहीं थी कि देह में आँख के योगदान को कान के योगदान से बढ़कर ठहराए। उसे उनकी स्वतंत्रता की चिंता थी। देह का कोई भी अंग अन्य अंगों के योगदान के बिना कार्य नहीं कर सकता है। प्रेरित ने पूछा, **यदि सारी देह आंख ही होती तो सुनना कहां से होता?** लगता है कि वह इस बात के प्रति सतर्क था कि वह इस चर्चा में न पड़े कि चाहे आँख या कान, हाथ या पाँव, देह में कौन अधिक योगदान करता है।

निःसंदेह कुरिन्थियों में पौलुस के इस चित्रण के अर्थ को लेकर कोई संदेह नहीं था। संभवतः इससे पहले कि वे समझते, उन्होंने तुलनाएँ करना आरंभ कर दिया होगा, उसी प्रकार से जैसे यीशु के श्रोता उसके दृष्टांतों में लीन हो जाते थे। पौलुस चाहता था कि वे प्रश्न पूछें, जैसे कि, "क्या हो यदि कलीसिया के सभी

सदस्य भूखों को भोजन करवाना चाहें, परन्तु विश्वास में दुर्बलों का पोषण करने के लिए कोई तैयार न हो?" यदि भौतिक देह अपने विभिन्न अंगों के योगदान को तुलनात्मक योग्यता आवंटित करती, तो यह सभी अंगों के लिए हानिकारक होता। कलीसिया कितनी अरुचिकर देह होती यदि उसके प्रत्येक जन के पास बिलकुल वही योग्यताएँ, रुचियाँ और अनुभव होते।

आयत 18. यदि किसी विश्वासी में अन्य सदस्यों के योगदान की सराहना की घटी होती, तो उसे परमेश्वर द्वारा अपनी इच्छा के अनुसार प्रत्येक जन को दी गई प्रतिभा के वितरण पर मनन करना था। वह ही कलीसिया के विभिन्न सदस्यों को उनके कार्य आवंटित करता है- भौतिक देह में भी और मसीह की आत्मिक देह में भी। **परमेश्वर ने अंगो को अपनी इच्छा के अनुसार एक एक कर के देह में रखा है।** ऐसा होने के कारण प्रत्येक मसीही का, जो वह है और जैसा वह है उसके लिए उसका आदर होना चाहिए। प्रत्येक योगदान, वह चाहे जितना भी बड़ा या छोटा हो, मसीह की देह के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण है। कोई भी वरदान एक सदस्य को दूसरे की तुलना में श्रेष्ठ करने के लिए नहीं है। प्रेरित को इसकी कोई आवश्यकता नहीं लगी कि वह समझाए कि पवित्र आत्मा परमेश्वरत्व का भाग है; पिछली आयतों में जो वरदान पवित्र-आत्मा से उल्लेखित थे, उन्हें इस आयत में परमेश्वर से कहा गया है।

आयत 19. कुरिन्थुस की कलीसिया में कोई मसीही अपने कार्य को कितना भी महत्वपूर्ण समझता हो, उसे इस बात पर ध्यान करना था कि वहाँ कलीसिया थी जिस में प्रत्येक उसके समान ही था। पौलुस ने पूछा, यदि प्रत्येक सदस्य के पास पवित्र-आत्मा से वही एक वरदान होता, **तो देह कहां होती?** यदि अनेक सदस्य भिन्न कार्य नहीं करेंगे, तो देह नहीं होगी।

प्रत्यक्षतः कुरिन्थुस के मसीही आत्मिक जन होने का घमण्ड करते थे, परन्तु पौलुस, आत्मिक होने के उनके तात्पर्य में, उनसे असहमत था। यह प्रमाणित करने के लिए कि वे परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले जन हैं, वे अपने ज्ञान की ओर संकेत करते थे। उनके ज्ञान ने उन में से कुछ को वैराग के सिद्धांतों को अपनाने की ओर प्रेरित किया। वे दावा करते थे कि "यह अच्छा है, कि पुरूष स्त्री को न छुए" (7:1)। अन्य यह धारण रखते थे कि उनका श्रेष्ठ ज्ञान उनके द्वारा संदेहास्पद व्यवहार को सहन करने की उनकी क्षमता से प्रमाणित होता है, यहाँ तक कि वे अपने मध्य व्यभिचार को भी सहन कर लेते थे (5:1, 2)। प्रेरित ने इन लोगों को चुनौती दी: ज्ञान का होना आत्मिक होने की प्रत्याभूति नहीं है; इसके विपरीत, उनका व्यवहार दिखाता था कि वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर रहे थे।

कुरिन्थियों का मानना था कि, उनके आत्मिक होने का दूसरा चिन्ह था, उनके पास आत्मिक वरदान थे। अध्याय 12 से 14 तक, पौलुस ने श्रेष्ठ आत्मिक वरदान की उनकी धारण को चुनौती दी। वे अन्य भाषाओं को अन्य वरदानों से श्रेष्ठ मानते थे; परन्तु पौलुस के आत्मिक वरदानों की सूची में, 12:8-10 में, अन्य भाषाएँ सबसे अन्त में आती हैं। पौलुस चाहता था कि आत्मिक होने की उनकी धारणा को सुधारे; उसने संकेत दिया कि वास्तव में आत्मिक होना प्रेम के मार्ग के

लोग होना है। देह की एकता तक पहुँचने के लिए, वास्तव में आत्मिक होने के लिए, नम्रता की आवश्यकता थी न कि ज्ञान की; यहाँ माँग थी कि भाई लोग प्रेम को अन्य भाषाओं तथा अन्य चमत्कारी वरदानों से अधिक महत्व देना सीखें।

आयत 20. प्रेरित द्वारा प्रयुक्त अलंकार में उसकी उपयोगिता निहित है। देह, चाहे वास्तविक या आत्मिक, अनेकों अंगों से मिलकर बनी होती है। प्रत्येक अंग समस्त की भलाई के लिए कार्य करता है। न तो कोई भौतिक देह और न ही कोई कलीसिया अन्य किसी रीति से कार्य नहीं कर सकती है, क्योंकि परमेश्वर ने ठहराया है कि **अंग तो बहुत से हैं, परन्तु देह एक ही है।**

प्रथम शताब्दी के एक वैरागी दार्शनिक ने इस तर्क के द्वारा, कि प्रत्येक व्यक्ति वृहद मानवीय परिवार में संभागी होता है, यही बात कही। फिर उसने पूछा, "आप क्या हैं?" और उसने फिर यह उत्तर दिया:

> एक मनुष्य। यदि आप स्वयं को अलग की हुई वस्तु देखते हैं, तो आपके लिए स्वाभाविक है कि आप वृद्ध होने तक जीवित रहेंगे, धनी होंगे, स्वास्थ्य लाभ उठाएंगे। परन्तु यदि आप अपने आप को मनुष्य मानते हैं और किसी संपूर्ण का एक भाग, तो उस संपूर्ण के कारण आपके लिए यह उपयुक्त है कि आप अभी अस्वस्थ हों, आप अभी कोई यात्रा करना चाहें और जोखिम उठाएं, और अब आवश्यकताओं में आ जाएँ, और कभी-कभी अपने समय से पहले मर जाएँ। तो फिर आप दुःखी क्यों होते हैं? क्या आप नहीं जानते कि जैसे यदि पाँव यदि अलग हो जाए तो फिर वह पाँव नहीं रहता, वैसे ही आप भी यदि अलग हो जाएंगे तो मनुष्य नहीं रहेंगे? तो मनुष्य क्या है? एक स्थिति का भाग; पहले उस स्थिति का जो देवताओं और मनुष्यों से बनी है, और फिर उसका जो दूसरे के बहुत निकट कहा जाता है, वह स्थिति जो विश्वव्यापी स्थिति का भाग है। ... भला क्या आप चाहेंगे कि कोई और ज्वर से अस्वस्थ हो, कोई और यात्रा पर जाए, कोई और मरे, किसी और को दोषी ठहराया जाए? क्योंकि यह उस देह में जैसी हमारी है असंभव है, इस विश्व में जो हमें घेरे हुए है, हमारे साथ के संगी जीवों में, ऐसी बात न हो, एक मनुष्य के साथ कुछ और किसी अन्य के साथ कुछ।[13]

आयत 21. यहाँ तक प्रेरित ने देह की भिन्नताओं पर बल दिया था। देह का प्रत्येक अंग देह के अन्य सभी अंगों पर निर्भर होता है कि अपना कार्य कर सके। पवित्र आत्मा अपनी इच्छानुसार भिन्न वरदान देता है। प्रत्येक मसीही, कलीसिया की आवश्यकताओं के लिए, अपनी-अपनी रीति से योगदान देता है। जैसे पाँव को हाथ की आवश्यकता है और कान को आँख की, भाई भी संपूर्ण की भलाई के लिए परस्पर एक दूसरे पर निर्भर हैं। यदि नकारात्मक, **मुझे तुम्हारा प्रयोजन नहीं** प्रेरित की पहली चितौनियों में निहित था, तो उसने 12:21 में उसे स्पष्ट कर दिया। किसी मसीही को, देह में अन्य के कार्यों या व्यवहार की, क्योंकि उसका योगदान उनके योगदान से भिन्न हैं, निन्दा करने का अधिकार नहीं है।

आँख, कान, पाँव, और हाथ पौलुस के उद्देश्य को, जब उसने अंगों के परस्पर निर्भर होने की दलील दी, पूरा कर चुके थे। इन अंगों की सूची भिन्न वरदान पाए

हुए मसीहियों के प्रतिरूप के लिए थी (12:15, 16)। प्रेरित इस चित्रण को एक नई दिशा में मोड़ रहा था। जिनके पास अधिक वांछनीय वरदान थे उनमें प्रत्यक्षतः उनके प्रति तिरस्कार था जिनके पास वैसे वरदान नहीं थे। न केवल वे अपने वरदानों को अधिक श्रेष्ठ दिखाते थे, वरन वे स्वयं भी इठलाते थे कि उन वरदानों के होने के कारण वे स्वयं भी अधिक श्रेष्ठ हैं। वे मानते थे कि उन्हें उन की कोई आवश्यकता नहीं है जिनके पास हलके समझे जाने वाले या कम चमत्कारिक वरदान थे। वांछनीय आत्मिक वरदानों के होने से आने वाली वरिष्ठता का भाव उस भावना के तुल्य था जिसके अन्तर्गत भौतिक रीति से समृद्ध मसीही, अपना भोजन करने के लिए, अपने आप को निर्धनों से पृथक कर रहे थे (11:20, 21)। दोनों ही स्थितियों में, देह की एकता पर तनाव था।

आज कलीसिया में, पौलुस के द्वारा संबोधित प्राचीन मण्डली के समान, जो कम प्रत्यक्ष कार्य करते हैं, वे यह समझकर कि उनकी भूमिका कम महत्वपूर्ण है, निराशा में पड़ सकते हैं। पौलुस ने आश्वस्त किया कि देह के स्वास्थ्य के लिए प्रत्येक अंग महत्वपूर्ण है। अन्य स्थितियों में, एक मसीही कलीसिया में जिसका कार्य प्रत्यक्ष है वह उनके प्रति जिनकी भूमिका कम विदित है, कम आदर का व्यवहार कर सकता है। पौलुस ने कुरिन्थियों से निवेदन किया कि वे अपने कार्यों को एक नए दृष्टिकोण से देखें। राज्य में उनकी सफलता इस से ही संभव थी कि अनेकों अन्य जन अप्रत्यक्ष रीति से देह के स्वास्थ्य के लिए कार्य कर रहे थे।

आयत 22. देह के वे अंग **जो दूसरों से निर्बल लगते हैं** दिखने में कम ध्यान के योग्य हैं, जो अपने कार्य स्वतः और शान्ति से करते हैं। देह की समानता में आगे बढ़ते हुए, प्रेरित के मन में संभवतः भीतरी अंग, जैसे कि हृदय, फेफड़े, या गुर्दे थे। इनके बिना देह ढह जाएगी; फिर भी उनके कार्य करने के लिए बांह, आँख, या मस्तिष्क को भी कोई चेतन प्रयास नहीं करना पड़ता है। उनके सुचारू कार्य **बहुत ही आवश्यक हैं** यदि इन्द्रियों को देह को सूचित करना है, या मांसपेशियों को उसे अर्थपूर्ण प्रत्युत्तर देने के लिए दिशा-निर्देश देने हैं। यह कहने के स्थान पर कि "मुझे तुम्हारा प्रयोजन नहीं", देह अपने कम ध्यान में आने वाले अंगों पर और भी अधिक निर्भर है। इसी प्रकार प्रभु के लोगों की देह में, वे जो श्रम करते और वाँछित तथा अप्रत्यक्ष रीति से योगदान करते हैं, उन्हें कभी किसी अन्य से बदला नहीं जा सकता है। कलीसिया के प्रत्येक सदस्य के लिए यह स्मरण रखना भला होगा कि देह का स्वास्थ्य किसी की व्यक्तिगत सम्मान से अधिक महत्वपूर्ण है।

आयत 23. शरीर के कुछ अंगों का कार्य बहुत आवश्यक है किंतु सामान्यतः वे विनम्र संवाद का विषय नहीं बना सकते हैं। उन्हें **हम आदर के योग्य नहीं समझते हैं** क्योंकि वे देह की आवश्यकताओं के लिए एकांत में तथा व्यक्तिगत रीति से कार्य करते हैं। इन अंगों को विशेष रीति से ढाँपने के द्वारा, उन्हें **हम अधिक आदर देते हैं।** इससे **हमारे शोभाहीन अंग और भी बहुत शोभायमान हो जाते हैं।** उन कुरिन्थियों ने, जो पौलुस की पत्री को ध्यान से पढ़ रहे थे, संभवतः एक ऐसे विषय को पहचाना होगा जिस पर प्रेरित लेख में बल देता आ रहा था: "परन्तु परमेश्वर ने जगत के मूर्खों को चुन लिया है, कि ज्ञान वालों को लज्जित

करे; और परमेश्वर ने जगत के निर्बलों को चुन लिया है, कि बलवानों को लज्जित करे" (1:27; देखें 2:3; 4:10; 9:22)।

पौलुस ने भौतिक देह के प्रत्यक्ष रूप और आत्मिक देह में भिन्न लोगों या भिन्न प्रकार के लोगों में तुलना को जारी रखा। उसकी चिंता, निःसंदेह, एकता, संबद्धता, सदभाव, और कलीसिया का सुचारू रीति से कार्यकारी होना था। इस कारण से, पाठक की अपेक्षा हो सकती है कि पौलुस के अगले शब्द कलीसिया के "शोभाहीन अंगों" से आग्रह के होंगे कि वे देह को अपना योगदान देते रहें, यह जानते हुए कि वे प्रभु के लिए बहुमूल्य सेवा कर रहे हैं। कोई ऐसे सदस्यों के लिए कुछ आश्वासन की भी प्रत्याशा कर सकता है कि प्रभु उनकी सेवा के प्रति ध्यान रखता है। इसके स्थान पर प्रेरित ने अधिक श्रेष्ठ वरदानों वालों को प्रोत्साहित किया कि वे उन पर जिन्हें कम ध्यान मिलता है "अधिक आदर दें"।

आयत 24. क्योंकि लोग देह के **शोभायमान अंगो को** कोई विशेष सज्जा नहीं देते हैं, और "शोभाहीन अंगों" को देते हैं, तो तात्पर्य यह है कि देह के भले-स्वास्थ्य के लिए कोई भी एक किसी दूसरे से अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। इसी प्रकार से, परमेश्वर देह के उन अंगों को अधिक आदर देता है जो उसके भले स्वास्थ्य के लिए बिना पहचान के कार्य करते हैं। पौलुस की कदापि यह मंशा नहीं थी कि देह के उन अंगों को गौण जताए जिनके कार्य सबके सामने प्रगट हैं। वह कुछ को दूसरों की अपेक्षा गिराना नहीं चाहता था; वह तो सभी सदस्यों को एक साथ उठाना चाहता था। देह के प्रत्येक अंग की उपयोगिता निश्चित है क्योंकि **परमेश्वर ने देह को ऐसा बना दिया है** [συγκεράννυμι, *सुन्केरान्नुमी*, का सामान्य भूत काल, "प्रबंधित करना", या "एक साथ गठित करना"] जिससे सबको योग्य आदर मिले, प्रत्येक को उसके अनुसार। लियोन मौरिस ने लिखा, "परमेश्वर द्वारा देह में अंगों का प्रबंधन समस्त टकराव को हटा देता है और सभी को एक साथ सम्मिश्रित कर के एक सुव्यवस्थित संपूर्ण बना देता है।"[14] अंगों के एक साथ मिलकर कार्य करने की योजना तो यही है। कुरिन्थी व्यक्तिगत सम्मान के मूर्ख प्रदर्शनों के लिए परमेश्वर द्वारा स्थापित की गई एकता को तोड़-मरोड़ रहे थे।

आयत 25. कोई दो सौ वर्ष पूर्व, एक पुनारुद्धारवादी प्रचारक, जो हाल ही में आयरलैंड से संयुक्त राज्य अमेरिका आया था, मसीह की कलीसिया की एकता को लेकर संघर्षरत था। एक विभाजित साम्प्रदायिक पंथ में सुधार देखने के इच्छुक, थॉमस कैम्पबेल, ने यह पहचाना कि मसीही एकता प्राप्त करने के लिए कोई लक्ष्य नहीं वरन अंगीकार करने के लिए एक तथ्य है। उसने अपने *डिक्लेरेशन एण्ड एड्ड्रेस* की तेरह प्रस्तावनाओं का आरंभ इस विचार के साथ किया कि,

> ... पृथ्वी पर मसीह की कलीसिया अनिवार्यतः, साभिप्राय, और संवैधानिक रूप से एक है; यह उन से बनी है जो सभी स्थानों पर मसीह में अपने विश्वास को प्रकट करते हैं और सब बातों में पवित्रशास्त्र के अनुसार उसके आज्ञाकारी

रहते हैं, और अपने स्वभाव तथा व्यवहार से इसे ही प्रकट करते हैं, और किसी को नहीं; क्योंकि इसके अतिरिक्त किसी अन्य को सच्चाई और सही रीति से मसीही नहीं कहा जा सकता है।[15]

कैम्पबेल की इस निर्भीक घोषणा को लेकर पौलुस को कोई विवाद नहीं होगा। प्रेरित इससे अवगत था कि मसीही कभीकभी दल या पंथ बना लेते हैं-, और किसी कारण से नहीं तो एक उपदेशक के स्थान पर किसी दूसरे को पसंद करने के कारण से। सामाजिक स्तर, संपत्ति, या शिक्षा के कारण परस्पर कृत्रिम अवरोध खड़े हो जाते हैं। जब विचार भिन्न हों और निष्ठाएं दृढ़ हों तो बहुधा विभाजन ही परिणाम होता है। पौलुस ने विभाजन करने वाले पाप और घमण्ड का प्रतिरोध करने के लिए बलपूर्वक कहा कि कलीसिया अनिवार्यतः एक है। परमेश्वर ने उसे ऐसा बनाया है **ताकि देह में फूट न पड़े।** प्रेरित ने भौतिक देह के विभिन्न अंगों को यह दलील देने के लिए व्यक्तित्व प्रदान किया कि मसीही व्यक्तिगत रीति से **एक दूसरे की बराबर चिन्ता करें** जैसी कि वे अपनी करते हैं। अपनी देह, कलीसिया के लिए, परमेश्वर की योजना यही है कि वह एक दूसरे के साथ सटीक गठी रहे, और प्रत्येक सदस्य उन वरदानों के अनुसार कार्य करे जो उसे मिले हैं और प्रत्येक सदस्य अन्य सभी का उनके कार्य के लिए आदर और सम्मान करे। पौलुस के पाठकों को यह समझना था कि ईर्ष्या, श्रेष्ठता की लालसा रखना, और पवित्र-आत्मा के अधिक विदित वरदानों का लालच करना सही मसीही व्यवहार से बाहर की बातें हैं।

आयत 26. देह के किसी अंग को ऐसा कुछ भी नहीं होता है जिसका प्रभाव समस्त देह पर न पड़े। जो आदर एक सदस्य का होता है, वह समस्त देह का आदर होता है। एक सदस्य पर आने वाला कष्ट सारी देह के लिए कष्ट होता है। एक के लिए आनन्द और उत्सव सारे समाज के लिए उल्लास का कारण होता है (देखें रोमियों 12:15)। मसीही प्रभु द्वारा उन्हें दिए गए दायित्व में पीछे रह जाते हैं जब उन्हें दुखियों के दुःख में सम्मिलित होना, आनन्दित होने वालों के आनन्द में सम्मिलित होने से अधिक सरल लगता है। एक ही देह में साझा होने के कारण, मसीही पवित्र-आत्मा के बंधन से एक साथ बंधे हुए हैं। पवित्र आत्मा के भिन्न वरदान कभी विभाजन का स्त्रोत नहीं बनने चाहिएँ।

व्यक्तित्ववादी पश्चिमी संस्कृति में, विश्वासियों के लिए यह सीखने से अधिक महत्वपूर्ण सम्भवतः और कुछ नहीं है कि मसीहियत एक सामूहिक अनुभव है। मसीह के साथ कोई एकता नहीं हो सकती है यदि वह एकता देह के कार्य करने से होकर न आए। आज जब धर्मी लोग पूछते हैं, "क्या मसीह आपका व्यक्तिगत उद्धारकर्ता है?" तो उनका उद्देश्य मसीह के साथ एक औपचारिक नहीं वरन निकट के गहरे संबंध को बनाना होता है। परन्तु, परमेश्वर ने विशिष्ट निर्देष दिए हैं जिनका पालन प्रत्येक उस व्यक्ति को करना है जो उद्धार चाहता है। उसने कहा है कि लोगों को सुसमाचार सन्देश सुनना और उस पर विश्वास करना, अपने पापों से पश्चाताप करना, परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह में, जिसने पापों की क्षमा

के लिए अपना लोहू बहा दिया, अपने विश्वास का अंगीकार करना है (देखें प्रेरितों 2:38; रोमियों 10:8-10; 1 कुरिन्थियों 1:21)। जो यह मानते हैं कि मसीह की सेवा करने का सार बस मसीह को अपने हृदय में आने देना है, उन्हें पौलुस की कलीसिया और मानवीय देह में इस समानता पर और ध्यानपूर्वक विचार करना चाहिए। यीशु ने अपनी तुलना दाखलता से और उस पर विश्वास करने वालों की डालियाँ से की। कोई भी अकेला विश्वासी अच्छा फल नहीं ला सकता है जब तक कि मसीह के साथ संभागी न हो (यूहन्ना 15:1-11)। इसी प्रकार, वे भी परमेश्वर को कोई आदर और महिमा नहीं दे सकते हैं जब तक उसकी देह के अंग न हों।

"बड़े से बड़े वरदानों की धुन में रहो" (12:27-31)

[27]इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग अलग उसके अंग हो; [28]और परमेश्वर ने कलीसिया में अलग अलग व्यक्ति नियुक्त किए हैं: प्रथम प्रेरित, दूसरे भविष्यद्वक्ता, तीसरे शिक्षक या उपदेशक फिर सामर्थ्य के काम करनेवाले, फिर चंगा करनेवाले, और उपकार करनेवाले, और प्रबन्ध करनेवाले, और नाना प्रकार की भाषा बोलनेवाले। [29]क्या सब प्रेरित हैं? क्या सब भविष्यद्वक्ता हैं? क्या सब उपदेशक हैं? क्या सब सामर्थ्य के काम करनेवाले हैं? [30]क्या सब को चंगा करने का वरदान मिला है? क्या सब नाना प्रकार की भाषा बोलते हैं? [31]क्या सब अनुवाद करते हैं? तुम बड़े से बड़े वरदानों की धुन में रहो। परन्तु मैं तुम्हें और भी सबसे उत्तम मार्ग बताता हूँ।

मसीह की देह में एकता का आरम्भ व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी के साथ होता है। कुरिन्थ में आत्मा ने उन कुछ सदस्यों को वरदान दिए थे जो देह का निर्माण कर रहे थे। हालाँकि, कलीसिया की एकता व्यक्तिगत और मण्डली के स्तरों से परे जाती है। प्रत्येक मण्डली परमेश्वर के मसीह के प्रति एक सामान्य भक्ति के साथ बंधी है, जो लोगों को अपने लिए छुड़ाने के लिए मर गया। मण्डली स्तर से ऊपर के कलीसियाई कार्यों और उन कार्यों के मध्य में जिनका अभ्यास एक विशिष्ट स्थान पर किया जाना था, प्रेरित ने भेद की कोई रेखा नहीं खींची। उसकी चिंता उन वरदानों और प्रतिभाओं के विभिन्न प्रकारों के प्रति थी जिसमें मसीही योगदान करते हैं। जब विश्वासी ठीक प्रकार से अपनी प्रतिभाओं और कलीसिया की आवश्यकताओं को समझ जाते हैं, तो सभी तुच्छ ईर्ष्याओं का त्याग कर देंगे। प्रत्येक उस योग्यता में आनन्दित होगा जिसे परमेश्वर ने दूसरों को दिया है, और प्रत्येक सदस्य अपनी और संगी मसीहियों को परमेश्वर के द्वारा दी गईं प्रतिभाओं के माध्यम से परमेश्वर का आदर और महिमा करेगा।

आयत 27. एक-एक करके, प्रत्येक मसीही **मसीह की देह** के कल्याण के लिए परमेश्वर के द्वारा दी गईं अपनी क्षमताओं का योगदान करता है। जो कुछ भी प्रत्येक के पास सम्पूर्ण इकाई के रूप में है वह व्यक्तिगत **अंगो** के योगदान के बिना कुछ भी नहीं हो सकता। देह कोई और नहीं है। अपने प्रत्येक अंगों के, व्यक्तिगत

विचार सहित, कार्य करने वाली इकाई देह है। देह का प्रत्येक अंग जो भी करता है, वह कलीसिया ही है जो कार्य कर रही है। एक मसीही चाहे जो भी महान या लज्जा का काम करता है, वह कलीसिया है जो कार्य कर ही है। देह में जो स्थान एक मसीही के अधिकार में होता है उससे अलग कोई मसीहियत नहीं है। पौलुस ऐसे किन्हीं पृथक विश्वासियों के विषय में कुछ भी नहीं जानता था जो कहते हैं, "मसीह, हाँ; कलीसिया, न।" मसीही के लिए कोई भी "हाँ" उसकी देह के लिए "हाँ" से रहित नहीं है। जो लोग कलीसिया को एक वर्गीकृत क्रम या एक इमारत समझते हैं वे भूल कर रहे हैं। कलीसिया परमेश्वर के लोग हैं, जो आराधना कर रहे हैं और एक दूसरे को एक समान आशा और एक समान जीवन के तरीके के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं।

आयत 28. यद्यपि **कलीसिया** अक्सर मसीहियों के एक स्थानीय समूह की सभा के लिए उपयोग की जाती है, परन्तु ये विश्वासियों के विश्व्यापी समूह का उल्लेख भी करती है। पौलुस के द्वारा विषय वाक्य में τῇ ἐκκλησίᾳ (*ते' ईक्लिसिया*, "कलीसिया") के प्रयोग को, सन्दर्भ में लिया जाए, तो यह संकेत करता कि शब्द में आगे आने वाली वरदानों की सूची का वैश्विक के साथ ही स्थानीय अनुप्रयोग भी था। प्रेरिताई चंगाई के वरदान के साथ आत्मा के वरदान के रूप में खड़ी थी। प्रेरित का कार्य अधिकार का संकेत देता है (देखें मत्ती 28:16-20); प्रेरितों ने प्रत्येक स्थान पर कलीसिया के प्रोत्साहन और शिक्षा के लिए कार्य किया। **प्रेरित** उन लोगों के लिए एक सामान्य शब्द हो सकता है जिन्हें कलीसिया के द्वारा एक विशेष कार्य (मिशन) पर भेजा गया था (प्रेरितों 14:14[16]), परन्तु इसी शब्द को मसीह के द्वारा के नियुक्त किए गए बारह पुरुषों के लिए भी उसके पुनरुत्थान के गवाहों के रूप में इस्तेमाल किया गया था। बारह प्रेरितों को अधिकार सहित आज्ञा दी गई थी, (मरकुस 16:14-18)। पौलुस के पास भी वही अधिकार और मिशन था जो बारहों को दिया गया था (1 कुरिन्थियों 15:9; गलातियों 1:11, 12)।

भविष्यद्वक्ता, प्रेरितों सहित, एक कलीसिया को उसकी शिक्षाओं और कार्यों में मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए परमेश्वर की ओर से प्रेरित होते थे; परन्तु भविष्यद्वक्ताओं का अधिकार प्रेरिताई के कार्य से कम था। जब उनका वर्णन प्रेरितों के साथ किया जाता है, तो वे सूची में दूसरे स्थान पर आते हैं (12:28, 29; इफिसियों 2:20; 3:5; 4:11)। सम्भवतः कुछ मण्डलियों में प्रेरित और भविष्यद्वक्ता उपस्तिथ नहीं थे। पौलुस यह कह रहा था कि आत्मा ने उन लोगों को वरदान दिए हैं जो विश्वव्यापी कलीसिया के लाभ के लिए इन कार्यों में सेवा करते थे। भविष्यद्वक्ताओं ने मण्डली स्तर पर कार्य किया होगा या वे कलीसिया से कलीसिया में गए होंगे। एक प्रेरित या एक भविष्यद्वक्ता या अन्य किसी भूमिका के कार्य के सबंध में, पौलुस उन लोगों के विषय में बात कर सकता था जिन्हें मसीह ने स्वयं उसकी कलीसिया में स्थान दिया था; उसने अपने लोगों को उनके अपने-अपने कार्य "दिए" (इफिसियों 4:11)। अन्यजातियों के प्रेरित ने मसीही के कार्य और आत्मा के कार्य में कोई विशेष भेद नहीं किया।

आत्मा के द्वारा वरदान देने के माध्यम से, परमेश्वर ने कलीसिया में **शिक्षक** भी ठहराए (इफिसियों 4:11; देखें याकूब 3:1)। संभवतः सभी मण्डलियों में शिक्षक उपस्तिथ थे। वे अति महत्वपूर्ण थे, परन्तु उन्हें सूची में तीसरे स्थान पर रखा गया है क्योंकि उन्हें आत्मा के द्वारा आवश्यक तौर पर अधिकारिक मार्गदर्शन देने लिए वरदान नहीं दिया गया था। अगले दो शब्दों के साथ, पौलुस पहले सूचीबद्ध किए गए वरदानों पर फिर से लौट आया। जो प्रश्न हमारे समय में कलीसिया में उठ खड़े हुए हैं वे विश्वासियों को चमत्कारी रूप से मिले आत्मिक वरदानों को उन स्वाभाविक क्षमताओं से अलग करने के लिए प्रेरित करते हैं जिन्हें मसीही कलीसिया की सेवकाई के लिए सौंप सकते हैं। इस प्रकार के भेदों में पौलुस की कोई रुचि नहीं थी। वह यह प्रदर्शित करना चाहता था कि अलग-अलग मसीही देह में विभिन्न प्रकार से कार्य कर रहे थे, फिर चाहे वे स्वभाविक प्रतिभाओं या चमत्कारी वरदानों का उपयोग क्यों न कर रहे हों। कुछ शिक्षकों को चमत्कारी ढंग से कलीसिया में कठिन प्रश्नों के उत्तर देने की क्षमता सहित वरदान दिया गया है, जबकि दूसरों को नहीं दिया गया।

जिन मसीहियों को आत्मा ने चमत्कारी शक्तियाँ दीं थी - वे जिन्होंने **आश्चर्यकर्म** किए - उनके उस श्रेणी में होने की सम्भावना थी जिसमें **चंगाई के वरदान** वाले लोग एक उपवर्ग थे। अगले दो वरदानों के लिए 12:28 के शब्द गैर-चमत्कारी क्षमताओं का उल्लेख करते हुए प्रतीत होते हैं। पहला, **उपकार करने वाले** (ἀντιλήμψεις, *एंटीलेम्पसीस,* "उपकार करने वाले"; NIV),नए नियम में केवल यहीं प्रकट होता है। यह कहना सुरक्षित होगा कि यह शब्द उन सहायता कार्यों का उल्लेख करता है जिनके द्वारा कुछ लोग अन्य लोगों के साथ, या तो देह में या देह के बाहर सेवकाई करते हैं। सम्भवतः आत्मा ने कुछ लोगों को कृपा और उपकार के कार्यो के लिए एक विशेष रुचि या अनोखे अवसर प्रदान किए थे। अगला शब्द, **प्रबंध करने वाले** (κυβερνήσεις, *कूबरनेसीस),* नए नियम में केवल यहीं पर एक बार दिखाई पड़ता है। यह व्यवहारिक मामलों में अगुवाई का उल्लेख करता हुआ प्रतीत होता है जैसे कि, सभा के लिए एक स्थान और समय का निर्धारण करना या स्वयं सभा के प्रबंध का मार्गदर्शन करना। यह कोई संयोग नहीं है कि पौलुस ने उस वरदान को अपनी सूची में सबसे अन्तिम में रखा जिसके विषय में कुरिन्थ के लोग सबसे अधिक लालच करते थे। उसने दिखाया कि **अन्यभाषाओं** में बोलने के वरदान (देखें 12:10) को विशेष सम्मान देने की आवश्यकता नहीं थी।

आयत 29. 12:29, 30 में अपने पिछले प्रश्नों के द्वारा, नकारात्मकता सहित μή *(मी),* पौलुस ने यह संकेत दिया कि उसे नकारात्मक उत्तरों की आशा थी। यूनानी व्याकरण की शक्ति को पकड़ने के लिए, NASB अनुवाद करती है, **क्या सब प्रेरित हैं?** और अन्य प्रश्नों में भी इसी स्वरूप का अनुसरण किया गया है। किसी को भी उस संगी मसीही से ईर्ष्या करने की आवश्यकता नहीं थी जिसके पास कुछ असाधारण वरदान थे, चाहे वे भाषाएँ, प्रेरिताई, या चंगाईयाँ ही क्यों न रहीं हो। कलीसिया की अच्छे ढंग से सेवा करने के लिए, उसे उसके सदस्यों में

विभिन्न प्रकार के वरदानों की आवश्यकता थी। प्रत्येक मसीही को उन वरदानों के कारण आनन्दित होना था जो दूसरों के पास थे और जो वरदान परमेश्वर ने उसे दिए उनके कारण उसे संतुष्ट भी रहना था। पौलुस के लिए, प्रेरिताई के कार्य ने उसे कुछ अवसरों पर आवश्यकता पड़ने पर इस प्रकार के वरदानों को बुलाने का अधिकार दिया होगा (1 कुरि. 14:18; 2 कुरि. 12:12)। प्रेरित कुरिन्थियों के लिए वह नमूना बन गया जो वह उनसे बनने की आशा रखता था। उसने अपनी क्षमताओं का अभ्यास मसीह की देह के कल्याण के लिए किया।

आयत 30. प्रत्येक प्रश्न के लिए एक नकारात्मक उत्तर की आशा सहित, शब्दों से भरे प्रश्नों की श्रृंखला जारी रहती है। निःसंदेह, हम सभी के पास एक समान वरदान नहीं हैं; यदि ऐसा होता तो कलीसिया एक निर्बल देह होती। देह के अंग एक दूसरे पर परस्पर निर्भर हैं। सम्पूर्ण देह की आशीष के लिए भाइयों और बहनों के द्वारा आनन्द लिए जाने वाले वरदानों पर आनन्द करना मसीहियों का कर्तव्य है। वरदान (अन्यभाषाओं में बोलना, चन्गाईयाँ, उपकार या प्रबंध करना) चाहे कुछ भी था, किसी के पास भी दूसरे को ईर्ष्या और जलन से भरकर देखने का अधिकार नहीं था। किसी को भी स्वयं को इस कारण तुच्छ नहीं समझना था कि उसके पास वह वरदान नहीं था जो दूसरों के पास था। सभी मसीही अन्य भाषाओं में नहीं बोले, और इसी प्रकार सभी चंगाई या अन्य आश्चर्यकर्म नहीं कर सके। 12:10 में जिस प्रकार पौलुस ने **अन्याभाषाओं** में बोलने का अनुसरण आशा की इस टिप्पणी के साथ किया कि अनुवाद इसके साथ आएगा। वह अनुवाद के विचार पर अध्याय 14 में फिर से वापस आएगा।

आयत 31. 12:31 के बीच में अध्याय का विभाजन और अधिक स्वभाविक तौर पर आता है। पौलुस ने कहा, **तुम बड़े से बड़े वरदानों की धुन में रहो;** पवित्रात्मा के द्वारा दिए गए वरदान के लिए उत्सुक होना सराहनीय था। पहली दृष्टि में, यह विचित्र प्रतीत होता है, कि पौलुस कलीसिया को वरदानों की खोज करने के लिए उत्साही होने को कहेगा, जब उसने 12:7-11 में यह कहा कि जैसा आत्मा चाहता है सबको बाँट देता है। हो सकता है कि कुरिन्थियों को यह समझने की आवश्यकता थी कि आत्मा ने इस प्रकार के वरदान उचित प्रकार से उन लोगों को दिए जो इनकी खोज में थे। एक मसीही जो एक विशेष वरदान की अभिलाषा कलीसिया की सेवा करने के लिए रखता था उसे यह लग सकता था कि आत्मा उसे वरदान प्रदान करना चाहता है। इन वरदानों पर चर्चा करने के बाद, पौलुस ने अपने पाठकों का मार्गदर्शन एक **और भी उत्तम मार्ग** की ओर एक सिद्ध एकता प्राप्त करने के लिए किया।

पौलुस की चिंता यह थी कि मसीही भाईचारे के प्रेम पर आधारित सेवकाई के लिए वरदानों की खोज करें। इस दृष्टिकोण से, कुरिन्थ के लोग परमेश्वर के सभी वरदानों में से अति महत्वपूर्ण वरदान को अनदेखा कर रहे थे (8:1; 16:14), जो कि स्वयं प्रेम ही था। पौलुस उनके सामने उस वरदान को खोलना चाहता था जिसका सभी दावा कर सकते थे। यह वरदान परमेश्वर की दृष्टि में उन सर्वोच्च दिखने वाले वरदानों की अपेक्षा कहीं बड़ा था जिन्हें कुरिन्थ के लोग

खोज रहे थे।

अनुप्रयोग

"वह मसीह की कलीसिया जा रही है"

एक प्रचारक को एक निर्धन पड़ोस के एक छोटे से मकान में एक बूढ़ी स्त्री के पास जाने के लिए कहा गया। वह विकलांग थी। एक मित्र उसके लिए किराने का सामान लेकर आया। वह जिस इमारत में रहती थी वह उसके बाहर कभी नहीं गई थी। प्रचारक ने कहा कि उसने एक उचित अवधि तक उस स्त्री के साथ बातें कीं, और उसके रोगों और अकेलेपन का ब्यौरा सुना, और उसने अपनी घड़ी पर भी अपनी नज़र रखी। एकबार जब मिनट की सुई एक निश्चित बिंदु से आगे बढ़ी, तो वह वहाँ से चला गया। वह इस आभार से उमड़ती हुई प्रतीत हो रही थी कि वह उससे मिलने के लिए वहाँ रुका था। उसे अपना कर्तव्य पूरा करने पर अच्छा अनुभव हुआ - परन्तु उसकी कहानी आगे जारी रही।

जैसे ही वह अपनी कार की ओर चलने लगा, वह कुछ बच्चों के पास से गुज़रा जो गली में खेल रहे थे। इनमें से एक लड़का परिचित लग रहा था; वह अपनी एक चाची के साथ आराधना सभाओं में आया था। और जैसे ही प्रचारक वहाँ से गुज़रा, उसने उस लड़के को जिसने उसे पहचान लिया था, अपने मित्र को यह बताते हुए सुना, "देखो वह मसीह की कलीसिया जा रही है।" उसने अपने पैरों के रुकने का अनुभव किया, जबकि वह वास्तव में रुका नहीं था। उसने सोचा कि उसे उस छोटे लड़के को यह समझाने की आवश्यकता थी कि वह "मसीह की कलीसिया नहीं था" परन्तु वह चलता रहा। उसने यह नहीं सोचा कि वह लड़का या उसका मित्र उस व्याख्या को समझेंगे।

हालाँकि, वह वाक्य उसके मन से नहीं गया। जिस प्रकार निर्दोष लोगों के मुँह के शब्द कार्य करते हैं, वह उसके मस्तिष्क में बना रहा। प्रचारक ने स्वयं से पूछा, यदि वह "मसीह की कलीसिया" नहीं था, तो कौन था? यदि इसे मण्डली के द्वारा चुना गया है? तो क्या उस बूढ़ी स्त्री के तंग मकान में उसका जाना मसीह के कार्य से बढ़कर हो गया है? क्या उसके जाने को पुरनियों की अनुमति की आवश्यकता थी? यदि सारी मण्डली उस स्त्री के सोफे पर बैठने के लिए आई होती, तो क्या वह कलीसिया होती जो कार्य करती? हो सकता है जब लड़के ने यह कहा, "देखो वह मसीह की कलीसिया जा रही है" तो वह सही था।

प्रचारक के मन ने लड़के के कथन पर ध्यान लगाना जारी रखा। आखिरकार, जब लड़के ने उसे देखा था तो वह बहुत सी बातें करता हुआ हो सकता था। वह इस बात से आनन्दित था कि लड़के और उसके मित्र ने उसे एक अनुचित पत्रिका पढ़ते हुए देखकर तंज नहीं कसा, "कि यह मनुष्य मसीह की कलीसिया है।" वह इस बात के प्रति आभारी था कि बच्चों को इसे उस व्यक्ति के लिए कहने की आवश्यकता नहीं जिसकी सांसो से मदिरा की गंध आती है। लड़को ने प्रचारक को एक आकर्षक जवान स्त्री के पास प्रेम प्रसंग के साथ जाते या बूढ़ी स्त्री को लूटने के

लिए उसके घर में जाते या उसका फ़ायदा उठाते हुए नहीं देखा था। उन्होंने कलीसिया के एक प्रतिनिधि को अपने लाभ के लिए झूठ बोलते हुए नहीं देखा था।

इस दिन, जब एक छोटे लड़के ने संकेत करके यह कहा, "वह मसीह की कलीसिया जा रही है" तो उसने अपने मित्र को एक अकेली, रोगी मसीही स्त्री से भेंट करने वाले एक व्यक्ति को दिखाया था। इन प्रभावित बच्चों ने उस स्त्री के सीमित जीवन में उसे एक छोटे से हर्ष को डालने का प्रयास करते हुए देखा था। पौलुस के ये वचन उसके मन में आए: "क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है और उसके अंग बहुत से हैं, और उस एक देह के सब अंग बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह हैं, उसी प्रकार मसीह भी है" (12:12); "इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग अलग उसके अंग हो" (12:27)। प्रचारक अपने ऊपर मुस्कुराया। निःसंदेह उस दिन वह मसीह का प्रतिनिधि बना था। भलाई या बुराई के लिए, हमारे कार्य सदैव मसीह की कलीसिया के कार्य होते हैं।

विश्वासियों का एक समूह

सैद्धांतिक तौर पर, एक व्यक्ति एक निर्जन टापू पर असहाय हो सकता है और अन्य मनुष्यों से अलग होकर परमेश्वर की महिमा कर सकता है। इस प्रकार का परिदृश्य सम्भव है लेकिन अनहोना नहीं है। बाइबल किस प्रकार लोगों के परमेश्वर की आराधना करने का चित्रण करती है? *बाइबल के सम्पूर्ण विस्तार में, परमेश्वर की आराधना एक समाज के घेरे में घटित हुई।* अब्राहम और उसके वंशजों ने पारिवारिक इकाई में परमेश्वर की सेवा की। जो कुछ भी एक सदस्य ने कहा और किया वह सम्पूर्ण इकाई के लाभ या हानि के लिए किया। जब लूत अब्राहम से अलग हुआ और यरदन घाटी की सींचाई वाली भूमि को चुना तो (उत्पत्ति 13:10), परिणाम घातक थे। कुलपिता का पारिवार और समाज की भावना ने उसे अपने भतीजे को राजाओं से बचाने के लिए अपने 318 पुरुषों को एकत्र करने के लिए उभारा (उत्पत्ति 14:14)। इस्राएल राष्ट्र पैतृक समाजों का एक विस्तार था। 1 कुरिन्थियों 12 में पौलुस का प्रोत्साहन उस विषय का विस्तार था जो सम्पूर्ण बाइबल में चलता है। परमेश्वर के लोग एक दूसरे के लिए एक समाज के रूप में जीते, आराधना करते और देखभाल करते हैं।

एक मनुष्य की देह की उपमा एक समाज की अवधारणा को अच्छी तरह चित्रित करती है। समृद्धि का सबके लिए विस्तार करने के लिए लोग गाँवो, नगरों, प्रान्तों, राज्यों और राष्ट्रों का निर्माण करते हैं। यह चित्रण करने के लिए कि प्रत्येक व्यक्ति सम्पूर्ण इकाई के लिए अपने भाग का योगदान करता है पौलुस विविधता में एकता की योजना का चित्रण करने वाला पहला व्यक्ति नहीं था। दार्शनिको और वक्ताओं ने इस उपमा का इतना उपयोग किया था कि यह यूनानी-रोमी सन्सार में एक स्थानीय चित्रण बन गई थी। फिर भी, प्रतिरूप कलीसिया के लिए विशेषतः एक मण्डली स्तर पर उचित है। ऐसा इसलिए है।

मसीह ने कलीसिया की समस्त देह सहित प्रत्येक मसीही को व्यक्तिगत रूप

से अपनी आज्ञा दी कि "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो" (मरकुस 16:15)। प्रभु ने इस कार्य को केवल चुने हुए कुछ प्रचारकों, याजकों, या अगुवों को नहीं दिया।

प्रत्येक व्यक्तिगत मसीही के पास उसकी अपनी क्षमताओं या प्रतिभाओं का एक समूह उस लक्ष्य में योगदान देने के लिए है जो परमेश्वर ने उसके लोगों को दिया है। आदर्शरूप में, प्रत्येक मसीही उन क्षमताओं में प्रशंसा या आनन्द करता है जिन्हें परमेश्वर ने उसे स्वयं या अन्य लोगों को दिया है। जिन लोगों के पास एक से अधिक वरदान हैं वे विशेष रूप से आशीषित लोग हैं, परन्तु प्रत्येक को जो भी प्रतिभाएं परमेश्वर ने दीं उन्हें उनका इस्तेमाल करना है। कलह और जलन मसीह की देह के लिए विनाशकारी हैं।

यद्यपि यह काफ़ी भागों से बनी है, तो भी देह एक समन्वित सम्पूर्ण इकाई है। जब एक सदस्य का आदर होता है, तो देह आशीष में भागी बनती है। जब एक सदस्य अपने कर्तव्य में विफल हो जाता है, जब एक मसीही पाप में दम तोड़ देता है, तो देह सम्पूर्ण इकाई के रूप में पीड़ा को झेलती है।

देह का एक भाग होना एक मसीही जीवन के लिए वैकल्पिक नहीं है। यदि देह को एक सामाजिक जीवन का आकार लेना है तो कलीसिया का संयोजन एक आवश्यक वस्तु है। एक मसीही बनना किसी के हृदय में यीशु को ग्रहण करने से बढ़कर है। एक व्यक्ति को परमेश्वर में विश्वास करने, पापों से पश्चाताप करने, यीशु के परमेश्वर का पुत्र होने का अंगीकार करने, और बप्तिस्मा लेने की ईश्वरीय आज्ञाओं का पालन करना चाहिए। इस तरह से, वह परमेश्वर के परिवार का भाग बन जाता है। एक मसीही का जीवन जीना केवल उस व्यक्ति और यीशु के मध्य का विषय नहीं है जो उसके नाम का अंगीकार करता है। इसमें प्रोत्साहन, सहायता, ताड़ना, और सुधार सम्मिलित हैं जो एक सामाजिक जीवन में बढ़ते हैं। बहुत से मसीही तब अपने संगी विश्वासियों पर दोष लगाने में तीव्र होते हैं जब उन्हें लगता है कि उन्हें अनदेखा किया जा रहा है, फिर भी वे उन लोगों को सहायता प्रदान करने में धीमे होते हैं जिन्हें उनकी सहायता की आवश्यकता होती है।

समाप्ति नोट्स

[1]जैसे 11:3-16 में कलीसिया की सभा में सिर ढांकने के बारे में जो वार्ता की गई है वह यहाँ पर विशिष्ट रूप से संभवतः लागू नहीं है। [2]क्लेमेंट ने कुरिंथुस की कलीसिया को लिखे पत्री में "जलन और ईर्ष्या, झगड़े और धोखाधड़ी ..." के विषय में लिखा है (क्लेमेंट ऑफ़ रोम *फ़र्स्ट क्लेमेंट* 3:2)। [3]भाषाविद इसे शब्द के सम्पूर्ण क्षेत्र में अभिप्राय को "शब्दार्थ विज्ञान" कहते हैं। [4]डी. ए. कारसन, *शोइंग द स्पिरिटः ए थियोलॉजिकल एक्सपोजिशन आफ 1 कुरिंथियन्स 12-14* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः बेकर बुक हाऊस, 1987), 19-22 में इस शब्द का अच्छा विश्लेषण दिया गया है। [5]जैक कॉट्रेल, *पावर फ्रॉम ऑन हाई: व्हॉट द बाइबल सेज़ अबाउट द होली स्पिरिट* (जोपलिन, मो.: कॉलेज प्रैस पबलिशिंग को., 2007), 411. [6]जेम्स ग्रीन्बरी, "1 कुरिन्थियों 14:34-35: इवैल्यूएशन ऑफ प्रौफेसी रिविजीटिड," *जर्नल ऑफ द एवैन्जैलिकल थियोलौजिकल सोसायटी* 51

(दिसंबर 2008): 724. [7]लियौन मौरिस ने तर्क दिया कि प्रेरितों 2 की "भाषाएँ" कुरिन्थियों से भिन्न बात है। उसकी राय अन्य अनेकों कौमेंट्रियों के समान है। (लियौन मौरिस, *द फर्स्ट एपिस्ल ऑफ पौल टू द कोरिन्थियंस*, रिव. एड., द टिन्डेल न्यू टेस्टामेंट कौमेंट्रीस [ग्रैंड रैपिड्स, मिच.: वम. बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग को., 1985], 169.) [8]डेविड ई. गारलैंड, *1 कोरिन्थियंस*, बेकर एक्सेजेटिकल कॉमेन्ट्री ऑन द न्यू टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिच.: बेकर एकेडेमिक, 2003), 584. [9]रॉबर्ट एच. गुंड्रे, "'एक्सटेटिक अट्टरैंस' (एन.ई.बी.)?" *जर्नल फॉर थियोलौजिकल स्टडीस* 17 (1966): 299-307. [10]जेरोम मर्फ़ी-ओ'कॉनर, *सेंट पॉल्स कुरिन्थुस: टेक्स्ट्स एण्ड आर्कियोलॉजी*, 3रड रिव. एण्ड एक्सप. एड. (कौलेज्विल्ले, मिन्न.: लिटर्जिकल प्रैस, 2002), 191.

[11]कोट्टरेल, 308-9. [12]लिवे *हिस्टोरिया* 2.32. [13]एपिकतेतुस *डिस्कोर्सिस* 2.5.25-26. [14]मौरिस, 173. [15]थॉमस कैम्पबेल, *डिक्लेरेशन एण्ड एड्ड्रेस* (सेंट. लूई: मिशन मेसेंजर, 1978)। इस दस्तावेज़ को ऑन्लाइन देखा जा सकता है (इसे सितंबर 25, 2015, को देखा गया, http://www.therestorationmovement.com/_states/wv/declaration.htm#4)। कैम्पबेल (1763-1854) ने यह संबोधन 1809 में किया था। [16]इसी शब्द को 2 कुरिन्थियों 8:23 में "दूतों" में अनुवाद किया गया है।